ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

फरवरी-2020

ऋषि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस पर विशेष

₹20

प्रकाशन का 22वां वर्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित प्रान्तीय जनचेतना यात्रा का जींद, जुलानी, खटकड़, घोघड़िया में भव्य स्वागत किया गया

इण्डस पब्लिक स्कूल में हवन १२वीं कक्षा की छात्रा प्रतिष्ठा ने अपनी अध्यापिकाओं के सहयोग से हवन कराया

झज्जर में आयोजित यज्ञ व अभिनन्दन सभा

शान्तिधर्मी परिसर में मासिक सत्संग; डॉ. पंकज सैनी दम्पती बने मुख्य यजमान। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य का उद्बोधन भी हुआ।

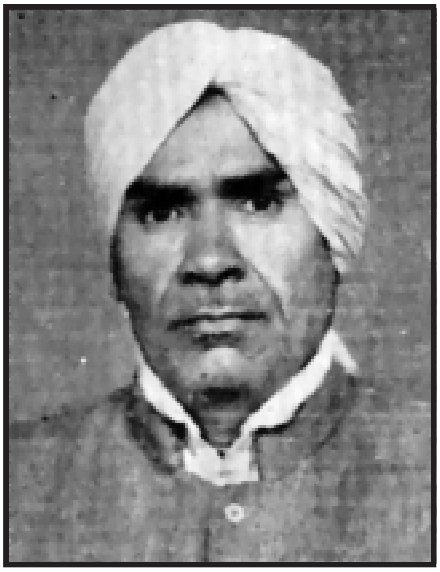

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

— — — — — — — — —

सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष **09416253826**)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापकः रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	२०.०० रु०
वार्षिक	:	२००.०० रु०
दस वर्ष	:	१५००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

प्रकाशन का बाईसवां वर्ष

फरवरी, २०२० ई०

वर्ष : २२ अंक : १ ~~माघ-फाल्गुन~~ २०७६ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९६

आलेख

सामवेद अनुशीलन (ज्योति बोल) ६
मानवता का मान (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७
कैसे बनेंगे बोध के अधिकारी ९
शिवरात्रि को टंकारा में क्या हुआ था १०
राष्ट्र-सेवा है चरित्र निर्माण ११
स्वामी दयानन्द और हिन्दू समाज १३
शिव और शिव रात्रि : एक दृष्टि १५
तकनीक से आजादी १६
मद्यपान पाप भी है और हानिकारक भी १७
धर्म और अधर्म (शास्त्र चर्चा) २०
हमें ऋत सत्य के लिए आत्मसमर्पण करना चाहिये (आत्मिक उन्नति) २२
अमृतोपम तुलसी (स्वास्थ्य चर्चा) २४
कविता : ८, २६
कथा/संस्मरण : सहिष्णुता का पाठ-१४, गुलामी का कारण (इतिहास कथा)-१९
स्तम्भ : बालवाटिका-२६, भजनावली-२८, बिन्दु बिन्दु विचार-३४

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, **पो बाक्स नं० 19**
मुख्य डाकघर जींद 126102
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द-१२६१०२ (हरि०)
दूरभाष : 9996338552
ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

जागरण का पर्व

❐सहदेव समर्पित

शिवरात्रि पर्व जागरण का पर्व है। संभवत: इस पर्व के नाम में रात्रि होने का यही अभिप्राय है कि गहन अंधकार में 'जागने' का दायित्त्व और भी बढ़ जाता है। वैसे तो रात्रि सोने के लिए है और दिन जागरण के लिए। प्रत्येक रात्रि के अन्त में सूर्योदय होता है, लेकिन अज्ञान की रात्रि का अन्त तो जागरण से ही संभव है। जो जब जागता है, उसके लिए तभी सुबह है। जो जागता है उसके लिए हर सुबह एक वरदान है, जो जागता नहीं है, ज्ञान के प्रकाश में भी आँख बंद करके ज्ञान से वंचित रहता है, उसके लिए प्रत्येक वरदान एक अभिशाप है।

यह जागरण का अवसर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक बार अवश्य आता है, बहुतों के जीवन में तो बहुत बार! प्रतिक्षण, प्रतिपल-प्रकृति की प्रत्येक गतिविधि, परमेश्वर की प्रत्येक व्यवस्था और हमारी प्रत्येक अवस्था-- हमें जागरण की प्रेरणा देती है। लेकिन इस प्रेरणा को-इस स्फुरण को विरले ही समझ पाते हैं- और उनमें से भी बहुत कम-उसे ग्रहण कर पाते हैं। जैसे सूर्य सबको प्रकाश देता है, पर उस प्रकाश व ताप को सभी प्राणी अपनी- अपनी व्यवस्था और अवस्था के अनुसार ही कम या ज्यादा ग्रहण कर पाते हैं। उसी प्रकार दयालु परमेश्वर भी सभी को ज्ञान का प्रकाश देता है, लेकिन मनुष्य अपने मन में दबी भरी वासनाओं - आकांक्षाओं के नक्कारखाने में उसकी आवाज नहीं सुन पाता। यदि कभी कहीं -हल्की सी सरसराहट सुनाई दे जाती है-तो हमारी आत्मिक कमजोरी की वजह से हमारे अंत:स्थ शत्रु हमारे मुँह पर कपड़ा बांध देते हैं- अपने तात्कालिक, क्षणिक, भौतिक सुखों की मोह रूपी रस्सियों में बंधे हुए हम छटपटा भी नहीं पाते। लेकिन जब झटका लगता है, जब ठोकर लगती है तो सारी बेड़ियाँ कटकटाकर टूट जाती हैं। हम शत्रुओं के मोहपाश से छूटकर अपनी ममतामयी माता की गोदी को प्राप्त करते हैं। आन की आन में सब कुछ बदल जाता है। पूरा परिदृश्य-- जीवन बदल जाते हैं- जीवन का उद्‌देश्य बदल जाता है- पात्रता प्राप्त कर - जिसने अपने अन्दर की प्यास को पहचान लिया-स्वयं प्रकाशित हो उठता है। उसके अन्दर बाहर प्रकाश की लहरियाँ उठतीं हैं, और यह सारे संसार को भी प्रकाशित कर जाता है।

आज से लगभग १८५ साल पहले गुजरात के टंकारा गांव में यह ज्योति जगमगा उठी थी। १४ वर्ष का मूलशंकर शिवरात्रि के जागरण में शिवलिंग के ऊपर धमा चौंकड़ी मचाते चूहों को देखता है तो उसके मन में उथल पुथल मच जाती है। आज तक की उसकी निष्ठा की, श्रद्धा की, विश्वास की नींव हिल जाती है। वह इस भयंकर संकट की घड़ी में पिता की शरण में जाता है - लेकिन समाधान नहीं होता- उसकी प्यास जाग उठी-उसकी तलाश शुरू हो गई, उसका बोध पर्व बन गया, और अब तक यह बोधपर्व संसार को प्रकाशमान् कर रहा है।

गुरुदत्त विद्यार्थी, विज्ञान और आधुनिक (तत्कालिक) विचारकों का गहन अध्येता! तर्क हार जाते- लेकिन वे कभी संतुष्ट नहीं होते। जब गुरु के देहत्याग का अवसर आया- तो मृत्यु के समय भी सूर्य की तरह दमकता हुआ चेहरा देखकर वह जाग उठा। उसका अंतर जाग उठा। उसका अंधकार भाग खड़ा हुआ। उसका साहित्य पढ़कर देखिए-पता लगेगा- दयानन्द की तुलना किसी और से करने वालों को- कि उनका एक अदना सा शिष्य, जिसकी अभी सारी दाढ़ भी नहीं आईं थीं-कितना उच्चकोटि का फिलास्फर था-दुनिया के ऊँची से ऊँची श्रेणी के दार्शनिकों के मुकुटमणि की तरह!

मुंशीराम-कोतवाल के बेटे पर एक जादूगर ने जादू कर दिया। माँ ने बहुत प्रयास किया कि मेरे बच्चे पर जादूगर की नजर न पड़े। लेकिन जादू तो जादू है। पिता के साथ सुनने गया प्रवचन, उसी का हो गया। पाठक विचार करें कि सर्वस्व क्या होता है। उसने सर्वस्व दे दिया! सर्वमेध कर दिया, अपनी अगली पीढी सहित! उस श्रद्धानन्द ने श्रद्धा को जीकर दिखाया और अपने सीने में गोलियाँ खाकर अपने गुरु का तर्पण किया।

पंडित लेखराम : ज्ञान का एक अनूठा साधक, जिसे दयानन्द ने धधका दिया। अपनी समस्त साधना उसने समर्पित कर दी। अपना छोटा सा बेटा भी भेंट चढ़ा दिया और स्वयं भी उसी राह पर बलिदान हो गए। न जाने कितने नाम हैं, जिन्होंने अपने खून से अपनी कहानियाँ लिखी हैं। उनकी आँखें खुली थीं और उन्होंने प्रकाश को अपने अन्दर जज्ब कर लिया था।

अज्ञान का मूषक हमारे मन के शिवालय में आज भी उछल-कूद मचा रहा है। पाखण्ड आज भी दनदना रहा है, नये नये स्वांग रचकर। उसके कोलाहल में मानव जीवन की वास्तविक अपेक्षाएँ मूक होकर विलीन हो गई हैं। मानव मन में कटुता और अनुदारता की जटिलताएँ इतनी बढ़ गई हैं कि ज्ञान उपेक्षित सा अपने स्थान की प्रतीक्षा कर रहा है। ज्ञान की तो न पहले कमी थी न आज है, कमी है तो जिज्ञासा भरी भूख की। देर तो केवल आँखें खोलने की है। प्रकाश से मनुष्य की इतनी ही दूरी है कि जब तक वह अज्ञान का मोह नहीं छोड़ता। 'मा क्लैव्यं गम पार्थ' समय का कृष्ण पुकार पुकार कर कह रहा है कि ओ ज्ञान के पिपासु! कायर मत बन। उठ खड़ा हो। अज्ञान पर अंतिम आक्रमण कर दे, विजय तेरी ही होगी, तू विजय का पात्र तो बन, तेरा अन्दर बाहर आलोकित हो उठेगा।

आपकी सम्मतियाँ

शान्तिधर्मी का जनवरी २० अंक प्राप्त हुआ। आवरण पृष्ठ बड़ा मनभावन, बसंती तस्वीर एवं ऋतुराज बसंती-जीवन के रंग-राग बसंती मन को अति उत्साहित करती है एवं सुकून देती है। आत्म चिन्तन में समर्पित जी द्वारा संस्कृति एवं धर्म विषयक ज्ञान मननीय है। आतंकवाद का प्रत्यक्ष युद्ध में-जब दुष्ट लोग एकजुट हो रहे हो तो अच्छे लोगों को भी उनसे निपटने के लिए एक साथ आना जरूरी है= आज समय की मांग है, अन्यथा पछतावे के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। 'दुल्हन कहाँ से लाओगे!' सामाजिक कुरीतियों को लेकर आरम्भ से ही पत्रिका जनमानस को जगाने का कार्य कर रही है। वास्तव में यह गागर में सागर भरने वाली पत्रिका है। समर्पित जी को बहुत साधुवाद!

श्री प्रकाश यादव (संस्कृत अध्यापक) 9466886108
गांव- पहराजवास, डाकघर-पाल्हावास
जिला-रेवाड़ी (हरियाणा)

गहन आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए मैं आपका और शांतिधर्मी पत्रिका का बहुत आभारी हूँ। मुझे आपकी सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के माध्यम से वैदिक सिद्धान्त के विषय में बहुत कुछ सीखने को मिला है। बहुत बहुत आभार।

टीपीएस राणा शाहाबाद दौलतपुर
मेन बवाना रोड़, दिल्ली-४२

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं। एक से एक लेख, कविता व भजन तथा प्रेरणादायक संस्मरण, जो कुछ भी आप दे रहे हैं, मैं उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। मैं सदैव आपके साथ हूँ।

श्रीपाल आर्योपदेशक 'वैदिक मिशनरी'
आर्य भवन, खेड़ा हटाना, जनपद बागपत, (उ० प्र०)

मैं श्रेष्ठ संस्कारों के प्रचार का पुनीत कार्य कर रही इस पत्रिका का बड़ी बेसब्री से इन्तजार किया करता हूँ।

ईश्वरसिंह आर्य प्रधानाध्यापक,
मु० पो० मस्तापुर, रेवाड़ी-१२३४०१

आध्यात्मिक मासिक पत्रिका शांतिधर्मी का जनवरी २०२० का अंक मिला, धन्यवाद! मुख्य पृष्ठ पर बसंत बहार का चित्र मनमोहक है। डॉक्टर जगदीप शर्मा राही की कविता 'ऋतुराज बसंती' पसंद आई। पत्रिका के पीछे के पृष्ठ पर विभिन्न चित्र सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक गतिविधियों का वर्णन करते हैं। आत्म निवेदन में संपादकीय 'सह अस्तित्व के सूत्र' आज के संदर्भ में सरकार के द्वारा नागरिकता संशोधन कानून, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर, जम्मू कश्मीर में धारा ३७० समाप्त करने, मुस्लिम समाज में तीन तलाक प्रथा को समाप्त करने आदि को लेकर सरकार के द्वारा जो कानून बनाए गए हैं उनको लेकर समाज के दो संप्रदायों में तीन पीढ़ियों से भी ज्यादा समय से चल रहे संघर्ष के मद्देनजर चिंता व्यक्त करने वाला था। दोनों समुदायों के बीच का टकराव कोई ६ ाार्मिक टकराव नहीं है, बल्कि मत-मतांतरों का टकराव है जिसे धर्म का नाम देने की भूल की जाती है। हमारे देश में अतीत में वैदिक धर्म था जिसके अनुसार लोग सुख, शांति, संयम, सहनशीलता पर विश्वास के साथ रहते थे। देश के विकास तथा कल्याण में सबका एक जैसा योगदान होता था। लेकिन महाभारत के युद्ध के बाद लगभग सभी विद्वानों, धर्माचार्यों, महारथियों तथा क्षत्रियों का विनाश हो गया और वैदिक धर्म भी लगभग लुप्त हो गया। धर्म का स्थान मत मतांतरों ने ले लिया और उनमें खूनी प्रतिस्पर्धा होने लगी। धर्म कभी भी दूसरे लोगों पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं देता। धर्म का उद्देश्य लोक तथा परलोक सुधारना होता है। समय-समय पर जो देश में दंगे, फसाद, खून खराबा आदि होते हैं वह विभिन्न मतों के शरारती लोगों के द्वारा दूसरे मतों के लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए होते हैं। इससे जहां मानवता का नुकसान होता है, आपसी विश्वास कम होता है, आपसी संबंध खत्म हो जाते हैं वहां देश की बदनामी भी होती है। हम सबके मत अलग हो सकते हैं लेकिन धर्म तो सबका एक है। यह धर्म हमें यह सिखाता है कि हमारे में संयम, एक दूसरे पर विश्वास, परहित, दूसरों के लिए त्याग, लोक तथा परलोक सुधारने की इच्छा आदि होना चाहिए। प्राचार्य पृथ्वी सिंह सहरावत का लेख युवकों का ही नहीं, बड़ों का भी मार्गदर्शन करता है। विभिन्न काव्य रचनाएं दिलचस्प, सामयिक तथा साहित्यक दृष्टि से उपयुक्त रही। रामफल आर्य और स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक के लेख पूरे समाज के लिए प्रेरणा का कार्य करते हैं। डॉक्टर मनोहर दास अग्रावत का लेख 'सर्वोपयोगी है आंवला' सर्वजनोपयोगी है। सुधीर मित्तल की बाल कविता 'छोटी चिड़िया' पसंद आई।

प्रोफेसर शामलाल कौशल 9416 35 90 45
मकान नंबर ९७५ बी
ग्रीन रोड, रोहतक १२४ ००१ हरियाणा

अनुशीलन सामवेद : आग्नेय पर्व

ज्योति बोल!

-लेखकः पं० चमूपति

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम्।।

ऋषिः- मनुर्वैवस्वत-विविध ज्योतियों वाला मननशील।

(अध्वरे+उक्थे) किसी का नाश न करने वाले और स्वयं नष्ट न होने वाले संगीतमय यज्ञ में (अग्निः) अग्निदेव(पुरोहितः) पुरोहित हैं। (ग्रावाण) (गान कर रही) चट्टानें तथा(बर्हिः) सब्जा (भी साथ है।) (मरुतः) हे मेरे मरणोन्मुख प्राणों! (देवाः) हे मेरी जीवन लीला में रत इन्द्रियों! (ब्रह्मणस्पते) हे विश्व याग के रक्षक, वेद वाणी के पति परमात्मदेव। मैं (ऋचा) इस वेदवाणी का आश्रय लेकर(वरेण्यम्) ग्रहण करने योग्य (अवः) ओट को (यामि) प्राप्त कर रहा हूँ।

विश्व प्रभु का गीत है। अग्नि देव का स्वाभाविक वचन है, उद्गार है। यह एक यज्ञ है। व्यवस्थित संयोग का प्रत्येक परिमाण यज्ञ है। जैसे गायक अक्षरों को मिला देता है, भिन्न-भिन्न स्वरों को लय में ला देता है, ऐसे ही अग्नि देव ब्रह्माण्ड के भिन्न-भिन्न घटकों को एक विशेष अनुपात में संयुक्त करके उनसे एक सुसंगत संसार की सृष्टि करता है। जगत् अध्वर है-यज्ञ के कारण विनाश से बच रहा है। यह एक संगीत है। प्रभु का स्वर और ताल से युक्त उद्गार है। विश्व में परमाणु ऐसे मिल रहें हैं जैसे संगीत के अक्षर। शक्तियाँ एक दूसरे के गले में हाथ डाले इस प्रकार जा रही हैं जैसे चतुर रागी के गले की लयें।

चट्टानें चुप हैं पर इस चुप्पी-चुप्पी से बोल रही है। उनमें परमाणुओं का संगतियुक्त संयोग एक मूक गीत नहीं तो क्या है? बोलता है, रेंगता है। इसमें विकास की विशेषता है। पत्थर जड़ है; घास चेतन-यह स्वयं बढ़ती है। हवा से, पानी से, जमीन से अपना अन्न ग्रहण करती है, और आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ती है। चट्टान निर्जीव जगत की प्रतिनिधि है, घास सजीव जगत् की। विश्व के महान् संगीत की ये दो मुख्य लयें हैं। पत्थरों के टकराने में तो अग्नि-देव के दर्शन हो ही जाते हैं। उस समय इन मुनियों का मौन-व्रत टूट जाता है। तमाशा तो यह है कि इनका चुपचाप संयोग भी पुकार-पुकार कर अग्नि-देव की पुरोहिताई की साक्षी दे रहा है। फिर सब्जी तो है ही अग्नि-देव का यजमान। सजीव शरीरों में जीव का हेतु अग्नि-देव की विद्यमानता ही है। विश्व एक यज्ञ है और अग्नि-देव उसका पुरोहित। विश्व एक संगीत है और अग्नि-देव उसका मुख्य गायक।

जहाँ अन्न बल का रूप धारण करने लगता है-निर्जीव भोजन सजीव शरीर का अंग बन जाता है-वहाँ अग्नि-देव निर्जीव नहीं, कोई जीवित-जागृत शक्ति प्रतीत होने लगता है। फिर इसके भी आगे जब अन्न मन में परिवर्तित्त होने लगता है- खाया-पिया, इन्द्रियों को पुष्ट करके उनके ज्ञानोपार्जन का साधन बन जाता है-तो जीवनाग्नि के चेतन होने में कोई सन्देह ही नहीं रहता। वैयक्तिक शरीर में आत्माग्नि का प्रताप है तो विश्व के शरीर में परमात्माग्नि का। वेद स्वयं उस अग्नि को 'चेतिष्ठ' कह रहा है। जिस चेतन का गीत सम्पूर्ण विश्व है, उसकी चेतन-शक्ति का गान-वैभव का कोई माप-तोल-कोई तर्कणा-गत अनुमान नहीं हो सकता। वह परम-चेतन है शेष चेतनों का आधार वही 'चेतिष्ठ' है।

जो शक्ति ब्रह्माण्ड में काम करती है वही पिंड में। विश्व की नासिकाओं में आँधियाँ चलती हैं तो शरीर के नथनों में प्राणों की गति है। आँधियाँ सिर पटक रही हैं, प्राण मरणोन्मुख हैं। इनका आश्रय कब तक? ब्रह्माण्ड के शरीर में कितने देव काम काम कर रहें है। विश्व शक्तियों की लीला-स्थली है। ऐसे ही मेरा छः फीट का शरीर। वह बड़ा रमणागार है, यह छोटा। इस खेल-खेल में आयु बिता देने वालों का क्या विश्वास? भौतिक बाजा किसी समय बिगड़ जाए उसमें से स्वर निकला कभी भी बन्द हो जाए। मरे हुए के मारू राग का कोई ठिकाना है? फोनोग्राफ का मारू आखिर मर ही तो जाएगा। यह और किसे मारेगा? अपने आपको।

सन्देह के इन तूफानों में यदि कोई भरोसा है तो गायक के गले का। 'ब्रह्मणस्पति' गा रहा है। ये श्वास-प्रश्वास उसी के हैं। यह दिव्य राग-लीला उसी अमर-रागी की है। आँधियाँ! चलो, तुम राग हो। देवो खेलो, तुम गीत हो। प्राणों! बोलों, तुम चीख नहीं; मीठी स्वर हो। इन्द्रियों नाचों, तुम मनोहर ताल हो। वेदवाणी स्वयं बोल रही है। अग्नि-देव का यज्ञिय संगीत मेरे रोम-रोम के कानों में पड़ रहा है। अब मुझे और सहायक की क्या आवश्यकता है? मुझे अटूट सहारा मिल गया है। एक सहायक का पल्ला पकड़ चुका हूँ। गीत को गायक की स्वर-लहरी के सिवाय और आधार चाहिए ही क्या? वांछनीय आधार यही है। ग्रहण करने लायक ओट इस अग्नि-देव की ही गीत गंगा है-ज्वालामयी गीत गंगा। मेरी जान! तू उसी अमर गायक के 'अधर' गीत का अंश है! चट्टानों की जुबान नहीं, पर वे बोल रही हैं, सब्जें के ओंठ नहीं, पर वह पुकार रहा है। तेरी जुबान भी है, ओंठ भी। तुझे बोलते क्या देर लगती है? तू स्वयं ऋचा बन जा-प्रभु का अमर आलाप बन कर बोल। शब्द ही अमरता आलाप बन जाने में है। ब्रह्मणस्पति के आधार उक्थ! बोल, ऋचा बन कर बोल। पत्थर है तो बोल। सब्जा है तो बोल। हवा है तो बोल। ज्योति है तो बोल। बोल, बोल। संसार को वेदमय कर दे। उक्थमय कर दे। ऋचामय कर दे!

मानवता का मान

❑स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य संस्थापक शांतिधर्मी

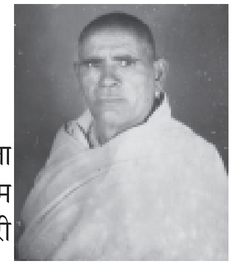

न्याय के पथ पर तो चलना ही कठिन है, और फिर उसको अपने जीवन का ध्येय बना लेना-- प्राणों का संकट उपस्थित हो जाने पर भी उस न्याय के पथ को न छोड़ना- कोई दयानन्द से सीखे। दुनिया का कोई प्रलोभन जिसको अपनी राह से न डिगा सके। मान अपमान के प्रसंग जिसको पल भर को अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित न कर सके।- ऐसा महामानव इस धरती पर सुगमता से नहीं मिलेगा! लेकिन दयानन्द उस परम्परा के प्रतिनिधि थे जिसमें न्याय की रक्षा करना और अन्याय का प्रतिकार करना प्राणों की रक्षा से अधिक मूल्यवान् माना जाता है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

भर्तृहरि का यह श्लोक स्वामी दयानन्द को अति प्रिय था। प्रशंसा का, धन का या प्राणों का लालच धीर पुरुष को अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। मनुष्य की सच्ची वीरता युद्धक्षेत्र में नहीं, कर्त्तव्यपालन में देखी जाती है और मनुष्य को इस वीरता को तो धारण करना ही चाहिए। धर्मात्मा लोगों का सहयोग और अन्यायकारियों का प्रतिरोध- स्वामी दयानन्द इसको मनुष्य का धर्म मानते हैं। मनुष्य उसी को कहना है कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं- चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित हों, उनकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो, उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे-- इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से कभी पृथक् न होवे। (स्वमंतव्यामन्तव्य प्रकाश) हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका, काशी में सैंकड़ों कुटिल प्रतिपक्षियों के बीच अकेला ईश्वर विश्वासी संन्यासी! अपने मन्तव्य को जीवन में उतारने वाला अद्भुत व्यक्तित्त्व! सारे संसार के विरोधियों के बीच सिंह की तरह दहाड़ने वाला दयानन्द देश की दुर्दशा को देखकर रातों को बैठकर रोता है। धन के अभाव में एक माता द्वारा अपने मृत पुत्र को आधे वस्त्र में लपेटकर जल में बहाते देखकर अपने आँसू नहीं रोक पाता है। अपने युग के विद्वानों को निरुत्तर कर देने वाला योगी कहता है कि यदि मेरा जन्म ऋषियों के काल में होता तो मेरी गणना बालकों में ही होती।

बसन्त बलिदान का प्रतीक बन गया है। उन बसन्ती चोले वालों ने अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए और अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया। बसन्त पंचमी के दिन एक छोटे से बालक का बलिदान हुआ। उसका नाम था हकीकत राय। बालकों की छोटी सी कहा सुनी के लिए उसे विकल्प मिला अपने धर्म और जीवन में से एक को चुनने का। १०-१२ वर्ष का बच्चा! जिसे जीवन की सही समझ भी नहीं। इस बात में निश्चिंत है कि उसे प्राण देकर भी अपने धर्म की रक्षा करनी है। हकीकत अपने प्राणों को हार कर भी जीत गया। उसने एक सर्वशक्तिमान सत्ता को चुनौती दे डाली। उसको मारने वाले उसको मारकर भी हार गए। विडम्बना तो यह है कि आज की पीढ़ी उसका नाम भी नहीं जानती।

आज देश और समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती कोई और नहीं है, बल्कि व्यक्ति स्वयं ही है। मनुष्य की कर्त्तव्यहीनता ही उसकी सारी समस्याओं की जड़ है। वोटर और नागरिक के रूप में व्यक्तिगत लोभ के कारण ही आज का नागरिक भ्रष्टाचारी लोगों की शक्ति को बढ़ाता है। काम कोई करना नहीं चाहता, ईनाम सब पाना चाहते हैं। न नेता काम करना चाहते हैं, न अधिकारी और न कर्मचारी। चाहे लोभ में, चाहे आलस्य में और चाहे भय में, आज कर्त्तव्यहीनता का ही बोलबाला है। न घर-परिवार में कर्त्तव्य पालन हो रहा है, न समाज में। इसलिए अराजकता फैल रही है। लोग अपने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर रहे हैं और एक दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। प्राणों की रक्षा के लिए तो कोई न्याय के मार्ग को छोड़े तो, बात समझ में आ सकती है, पर आज अधिकांश मनुष्य अकारण अन्याय के पथ का वरण कर रहे हैं। दो दो पैसे में ईमान डोल जाता है। आलस्य के कारण यज्ञ और स्वाध्याय नहीं करते। भले आदमियों का विरोध करते हैं और दुष्टजनों की चमचागिरी करते हैं। झूठी प्रशंसा को सुनकर प्रफुल्लित हो जाते हैं और हितैषी पुरुष द्वारा दोष दिखने पर अप्रसन्न हो जाते हैं। सत्य, न्याय और धर्म के बिना मनुष्य का जीवन अव्यस्थित हो रहा है और पक्षपातरहित न्याय के आचरण, सत्यभाषण आदि ईश्वर आज्ञा के पालन से मनुष्यता का मान होता है। ❑❑

अपना कणिक प्रयास लिखूँ।।

❒सतीश कुमार नारनौंद
8295960700

सुधीजनों के पद वंदन में,
अपना कणिक प्रयास लिखूँ।
विध्वंस करूँ, कभी सृजन में,
निरंतर रत अभ्यास लिखूं।
अपना कणिक प्रयास लिखूँ।।

निषंगी 'हुनर' उत्क्रमण करता,
शिला भंग 'रज्जु घर्षण' करता।।
सतत साधना 'द्विज गुण' चढ़ता,
मृदुल शिशु प्रथम चरण बढ़ता।
वो मातृ-हर्ष उल्लास लिखूं।।

प्रारब्ध छोड़ कर दुरुह जतन,
यहां श्रमेव-जयते का ही पूजन।
धनेश कोष भरे उनके नूतन,
फिर जीवन-ज्योत्स्ना बढ़े भुवन।
यश प्रशस्ति मिठास लिखूँ।।

इस जग-सिन्धु रहे प्रेम-प्रीति,
न अभिलाषा कोई वित्त-विभूति।
अमन-चैन रहे, सर्व हरित क्षिति,
जब वारिद-वर्षण, हो नृत्य शिखी
मकरंदी मधुमास लिखूं।।

सुधीजनों के पद वन्दन में,
अपना कणिक प्रयास लिखूं---

चरैवेति-चरैवेति

मानवोचित कर्म है चलते रहो-चलते रहो
श्रेष्ठतम सद्धर्म है चलते रहो-चलते रहो
वेद का शुचिमंत्र है, उत्कर्ष का साधन यही
सिद्धि का यह मर्म है, चलते रहो-चलते रहो

-महावीर प्रसाद मधुप

आज दिशाएँ करें आरती दयानन्द ऋषिराज की।।

❒सहदेव समर्पित

जिसने सूरज बनकर तम का तोम हटाया।
दे डाले नवप्राण, मृत्यु का भय बिसराया।।
सोया गुण-गौरव भारत का पुनः जगाया।
मानवता-हित जिसने आर्यसमाज बनाया।।
करके सिंह-निनाद जिन्होंने नींव रखी स्वराज की।
आज दिशाएँ करें आरती दयानन्द ऋषिराज की।।

बनकर सूर्य प्रचण्ड, वेद की लिये पताका।
काशी, पूना, लाहौर, पेशावर, कलकत्ता।।
पाखण्डों का पाप ज्ञानगरिमा से काटा।
काम क्रोध मद लोभ मोह से मन को डाटा।।
जिसने रक्षा करी आनकर देश जाति की लाज की।
आज दिशाएँ करें आरती दयानन्द ऋषिराज की।

जाति पाँति के ऊँच नीच के भेद मिटाए।
खण्डित कर पाखण्ड जिन्होंने वेद जनाए।।
कर करके शास्त्रार्थ सभी मतवाद हटाए।
सदियों के सोये भारत के भाग्य जगाए।।
आज बज रही विजय दुन्दुभि जग में आर्यसमाज की।
आज दिशाएँ करें आरती दयानन्द ऋषिराज की।।

अच्छा नहीं समझते।

बात-बात में खून बहाना, हम अच्छा नहीं समझते।
उठाई हुई दीवार को ढहाना, हम अच्छा नहीं समझते।

अग्नि देवता को साक्षी दे, हमने बहुत लड़ाईयाँ जीती है,
झूठ की वैतरणी में नहाना हम अच्छा नहीं समझते।

ढोंग या दिखावा हमारे लिए कभी आदर्श नहीं,
तप त्याग को नदी में दहाना हम अच्छा नहीं समझते।

श्रम की तौहीनी हमें सपने में भी नहीं भाती,
उपकार के बाद चहचहाना हम अच्छा नहीं समझते।

दुश्मनों के दांत खट्टे करना हमारे लिए मुश्किल नहीं,
बेमतलब के ही लहलहाना, हम अच्छा नहीं समझते।

डॉ० स्वर्णकिरण,
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हि० वि०, किसान कालेज,
सोहसराय,(नालंदा), पिन-८०३११८

कैसे बनेंगे बोध के अधिकारी

❑आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी 9412117965

जो मनुष्य उन दो अरणियों=ज्ञान और तप को जानता है, जिनके सबको बसाने वाले भगवान् का मन्थन किया जाता है, वही उस महान् ब्रह्मतत्त्व को जानता है।

मनुष्य को प्राप्त होने वाला सर्वोत्तम धन है मोक्षधन। इसी परमधन को प्राप्त करना महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का ध्येय था। इस धन के अभिलाषी महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने इस ध्येय के अनुकूल संस्कारों का कोष अपने पूर्व जन्मों से भी लेकर आये थे और उन्होंने वर्त्तमान जन्म में भी उन्हीं संस्कारों के अनुसार तीव्र गति से अपने ध्येय की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया था। ऐसा विशिष्ट मानव अपने निर्धारित लक्ष्य के विपरीत इस संसार रूप सागर में उठती हुई लहरों के थपेड़ों से कभी विचलित नहीं होता है क्योंकि उसने तप के द्वारा उस शक्ति का संग्रह कर लिया होता है कि जो शक्ति संसार की इन विपरीत तरंगों से, जो कि उसके लक्ष्य में बाधक हैं, उनसे टक्कर लेकर उन्हें प्रबल धक्के से दूर धकेलती हुई इसे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सके। ऐसा मानव अपने स्वभाव की दिशा को तो पहले ही बदल चुका होता है, इसलिये उसके पास अपने लक्ष्य से भटकाने वाले किसी प्रतिकूल संस्कार का भी दूर दूर तक नामोनिशान नहीं होता है। वह अपने इस जीवन में भी लक्ष्य का निर्धारण प्रभु की कृपा से स्वयमेव कर लेता है क्योंकि उसके जीवन का लक्ष्यानुसारी निर्माण इस वर्त्तमान जीवन में ही आरम्भ नहीं हो रहा है अपितु उसके उज्ज्वल जीवन का निर्माण पहले से ही होकर आया है।

अहो! इसी कारण से फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिवस ऋषिवर के जीवन में वह कैसी विचित्र घटना घटी थी कि उस दिन टंकारा के शिवमन्दिर के दृश्य ने जिसमें कि अचेतन प्रतिमाओं पर चढ़ाये गये पदार्थों को चूहे खा रहे थे– उनके पूर्वजन्म की संस्कार–माला का चित्र, उस घटना से विस्मित होकर अन्तर्ध्यान होते ही उनके मन के चित्रपट पर अविकल खींच दिया। प्रभु की कृपा से व्यवस्थानुसार ऋषिवर के संस्कार जग गये, ध्येय सामने आ गया और तत्काल ही वर्त्तमान के कार्यक्रम का सूत्रपात हो गया। यह सूत्रपात क्या था? यह सूत्रपात एक साधारण विचारधारा का प्रकाशमात्र ही न था, अपितु यह एक अवश्यम्भावी कार्यक्रम का उपक्रम था। इस कार्यक्रम का ध्येय था– प्रभुदर्शन; जो कर्त्तव्य के रूप में बनकर पूर्वजन्म से ही संस्कार के रूप में आया था। आदर्श महापुरुषों के जीवन की यह सबसे बड़ी विशेषता होती है कि वे ध्येय व उसको सिद्ध करने के कार्यक्रम का तत्काल ही निर्णय कर लेते हैं तथा तीव्र गति से उस कार्यक्रम का अनुष्ठान भी आरम्भ कर देते हैं। योगिराज स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने ऐसे महापुरुषों के लिये अथर्ववेद के एक मन्त्र का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु।
स विद्वान् ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत्।।

जो मनुष्य उन दो अरणियों को (ज्ञान और तप को) जानता है, जिनके मन्थन से सबको बसाने वाले भगवान् का मन्थन किया जाता है, वह ही विद्वान् उस ज्येष्ठ ब्रह्म का मनन करता है और वह ही उस सबसे महान् ब्रह्म तत्त्व को जानता है। अथर्ववेद में वर्णित 'ज्ञान' व 'तप' नामक ये दोनों अरणियाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती के हाथ में थीं। ज्ञान तो उन्हें अपनी पूर्व सञ्चित सामग्री के रूप में प्राप्त हो गया था, इसमें जो कुछ विस्मरण का आवरण था उसे प्रभु की कृपा ने उस व्रत के दिन अन्तर्ध्यान होते ही हटा दिया। अहो! अब उनके सामने अपने संस्कार रूप ज्ञान के प्रकट होते ही, इससे आगे का उनके जीवन का सारा ही कार्यक्रम एक कठोर उग्रतप की विचित्र झांकी है। इन ज्ञान व तप के द्वारा जिस आत्मा में ब्रह्म की शक्तियों का विकास हो जाता है, वह उसी ब्रह्म से प्रेरित होकर लोक कल्याण के कार्यों में लग जाता है। ब्रह्म प्राप्ति होने के अनन्तर ऋषि के जीवन का सारा ही दृश्य ऐसा है। इस दृश्य से अभिभूत आर्यजन फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिन ऋषिबोध पर्व मनाते हैं। आज के दिन एक घटना से विस्मित होकर अन्तर्हित हुए महर्षि को अपने अन्तःकरण में विराजमान, परन्तु कुछ ओझल ईश्वर प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा का बोध हुआ था और हम भी किसी अन्य विशेष घटना से नहीं, अपितु बोध की ही इस विचित्र घटना से बोध प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा करके हम उनके आदर्श जीवन के अनुगामी बनकर अभ्युदय व मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।।

बोध दिवस

शिवरात्रि का टंकारा के शिवालय में क्या हुआ था

❑भावेश मेरजा

पूना में 4 अगस्त 1875 को दिए गए अपने भाषण में महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन में घटित उस प्रसंग को सुनाया जो टंकारा के शिवालय में शिवरात्रि को घटित हुआ था। यह वही प्रसंग है, जिसने मूलशंकर के बाल मन को ऐसा प्रभावित किया कि उसने आगे चलकर एक ऐसी धार्मिक क्रान्ति को जन्म दिया जो विश्व इतिहास में अनूठी क्रान्ति है। ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है, न हो सकती है, और न ही किसी जड़ प्रतीक की पूजा अर्चना करने से ईश्वर की प्राप्ति या मन की एकाग्रता सम्पादित हो सकती है। ये वे सत्य थे जिनका मूल उद्गम शिवरात्रि वाला यही प्रसंग था। आइए, पढ़ते हैं स्वामी जी ने पूना के उन श्रोताओं को क्या बताया था अपने जीवन के इस अति महत्त्वपूर्ण प्रसंग के बारे में।

स्वामी जी ने अपने भाषण में कहा– 'मुझको लड़कपन में ही रुद्राध्याय सिखलाकर शुक्ल यजुर्वेद का पढ़ाना आरम्भ कर दिया था। मेरे पिता ने मुझको शिव की पूजा में लगा दिया। दसवें वर्ष से पार्थिव (मिट्टी के महादेव) की पूजा करने लग गया। मुझे पिता ने शिवरात्रि का व्रत रखने को कहा था, परन्तु मैंने शिवरात्रि का व्रत न किया। तब शिवरात्रि की कथा मुझे सुनाई, वह कथा मेरे मन को बहुत मीठी लगी और मैंने उपवास रखने का पक्का निश्चय कर लिया। मेरी मां कहती थी कि उपवास मत कर, मैंने माता का कहना न मानकर उपवास किया। मेरे यहां नगर के बाहर एक बड़ा देवल है। वहां शिवरात्रि के दिन रात के समय बहुत लोग एकत्रित होते हैं और पूजा करते हैं। मेरा पिता, मैं और बहुत मनुष्य इकट्ठे थे। पहले पहर की पूजा कर ली, दूसरे पहर की पूजा भी हो गई। अब बारह बज गए और धीरे-धीरे आलस्य के कारण लोग जहां-के-तहां झुकने लगे। मेरे पिता को भी निद्रा आ गई। इतने में पुजारी बाहर गया। मैं इस भय से न सोया कि कहीं मेरा उपवास निष्फल न हो जाय। इतने में यह चमत्कार हुआ कि मन्दिर में बिल से चूहे बाहर निकले और महादेव की पिण्डी के चारों तरफ फिरने लगे। पिण्डी पर जो चावल चढ़ाये हुए थे, उन्हें ऊपर चढ़कर खाने भी लगे। मैं जागता था, इसलिए यह सब कौतुक देख रहा था। इससे एक दिन पहले शिवरात्रि की कथा मैं सुन ही चुका था। उसमें शिव के भयानक गणों, उसके पाशुपत अस्त्र, बैल की सवारी और उसके आश्चर्यमय सामर्थ्य के विषय में बहुत कुछ सुन चुका था। इसलिए चूहों के इस खेल को देखकर मेरी लड़कपन बुद्धि आश्चर्य में पड़ गई और मैंने सोचा कि जो शिव अपने पाशुपत अस्त्र से बड़े-बड़े दैत्यों को मारता है, क्या वह ऐसे तुच्छ चूहों को भी अपने ऊपर से नहीं हटा सकता। इस प्रकार की बहुत-सी शंकायें मेरे मन में उठने लगीं? मैंने पिताजी को जगाकर पूछा कि ये महादेव इस छोटे चूहे को क्यों नहीं हटा देते। पिता ने कहा कि तेरी बुद्धि बड़ी भ्रष्ट है, यह तो केवल देवता की मूर्ति है। तब मैंने निश्चय किया कि जब मैं इसी त्रिशूलध् ाारी शिव को प्रत्यक्ष देखूंगा, तब ही पूजा करूंगा, अन्यथा नहीं।

ऐसा निश्चय करके मैं घर को गया, भूख लगी, माता से खाने को मांगा। माता कहने लगी, 'मैं तुझसे पहले ही कहती थी कि तुझसे भूखा नहीं रहा जायगा। तूने हठ करके उपवास किया।' मां ने फिर मुझे खाना दिया और कहा कि दो-तीन दिन तू उनके अर्थात् पिता के पास मत जाइयो और न उनसे बोलियो, नहीं तो मार खायगा, खाना खाकर मैं सो गया। दूसरे दिन आठ बजे उठा, मैंने सारी कथा अपने चाचा से कह दी। मेरे चाचा ने बुद्धिमत्ता से मेरे पिता को समझा दिया कि इसको आगे विद्या पढ़नी है, इसलिए व्रत उपवास आदि इससे कुछ न कराया करो। इस समय मैं इनसे यजुर्वेद पढ़ता था और दूसरे एक पण्डित मुझे व्याकरण पढ़ाते थे। सोलहवें या सत्रहवें वर्ष में यजुर्वेद समाप्त हुआ। इसके बाद मैं अपनी जमींदारी के गांव में पढ़ने के लिए गया।'

सन्दर्भ ग्रन्थ : पूना प्रवचन अथवा उपदेश मंजरी, अन्तिम प्रवचन

राष्ट्र सेवा है चरित्र निर्माण

❑**प्राचार्य पृथ्वीसिंह सहरावत** (सेनि) नाथवास वाले, भिवानी (9255971426)

मनुष्य और वस्तु में बड़ा अन्तर होता है। दोनों को एक समान समझने की कभी भूल ना करें। मनुष्य के भीतर की शक्ति संकट में आपके काम आ सकती है। उसे अनुपयोगी समझ कर मिटाने की चेष्टा न करें।

शिक्षा जीवन में दो वक्त की रोटी जुटाने में काम आती है परन्तु अच्छे संस्कार व्यक्ति के जीवन को सुरक्षित रखने, उसे बचाने के काम आते हैं। किताबों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, लेकिन उत्तम संस्कार, बड़ी उम्र के लोगों द्वारा घरों में ही दिए जाते हैं अथवा उनके आचरण से मिलते हैं। शिक्षा प्रदान करना आसान कार्य है परन्तु अच्छे संस्कार देना कठिन होता है क्योंकि संस्कार देने वाले और लेने वाले दोनों को गहराई में जाकर प्रयत्न एवं ६ र्य अपनाना पड़ता है। संस्कार तो स्थायी मामला है परन्तु शिक्षा अस्थायी मामला होता है। जीवन में शिक्षा और संस्कार दोनों ही महत्व रखते हैं। दोनों से व्यक्ति के मन में विचार पनपते हैं तथा विचारों से व्यक्ति कर्म की ओर प्रेरित होता है। कर्म से व्यक्ति का भाग्य और आदत की बनती है। आदत से आदमी का चरित्र बनता है और चरित्र आदमी की सफलता में चार चांद लगा देता है। शिक्षक और बड़ी उम्र के लोगों को चाहिए कि वे बच्चों को दोनों विषयों में जागरूक करके देश और समाज का भला करते हुए बच्चों का और अपना जीवन सफल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें। तभी जाकर शिक्षक और बड़ी उम्र के लोगों का समाज में फिर से महत्त्व स्थापित होगा, अन्यथा ये दोनों ही आने वाले समय में अधिकाधिक तिरस्कार के भागी बनेंगे।

'एक अच्छा शिक्षक शिष्य को अन्धकार से, अंहकार से, असत्य से मुक्ति दिलाता है। कर्म को ही धर्म मानने की प्रेरणा देता है'

हमने जन्म लिया है तो सभी शक्तियाँ साथ लेकर आते हैं। स्वामी विवेकानन्द को देखो- ३९ वर्ष की आयु में ऐसा कुछ कर गए जो कार्य ५०० वर्ष की आयु हो तो भी नहीं कर सकते हैं। शक्ति- संभावनाएं हमारे अन्दर हैं। बस उनको जाग्रत करने की आवश्यकता है। जैसे- शेर का बच्चा भेडों के झुंड में, हिरणों के मध्य में रहे तो वह भेड़ तथा हिरण की तरह आचरण करने लगता हैं। कभी शेर आए तो वह उनकी तरह डरकर भाग जाता है। यदि शेर के बच्चे को पकड़कर उसे शीशा दिखाया जाए तो वह जान जाएगा कि मैं शेर की तरह ही हूँ-- बल्कि मैं शेर ही हूँ। तब उसमें शेर जैसी शक्ति का उद्‌भव हो जाएगा। हमारे अन्दर देवत्व भी है- राक्षसी बुद्धि भी है। यदि हम सही ढंग से शक्ति को विकसित करें तो हम देवत्व का गुण भी प्राप्त कर सकते हैं। गांधी जी, सुभाष जी, पटेलजी को देखें। वे सामान्य आदमी से बड़े व्यक्ति बन कर उभरे। हम अपने अन्दर की छिपी शक्तियों को पहचानें तो हम सफल हो सकते हैं। मनुष्य में देवत्व का उदय हो सकता है। मनुष्य का जन्म अच्छाई करने के लिए होता है, लेकिन संगति के प्रभाव के कारण रास्ते से भटक जाता है। कोई -कोई दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति ही सही मार्ग पर चलते हुए, कठिनाइयों का मुकाबला करते हुए सफल मानव बन पाता है। आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ करना चाहिए। पीढ़ी से मेरा अभिप्राय: यह नहीं है कि मेरी अपनी संतान ही मेरे कार्य का लाभ लेती रहे, लेकिन अन्य सभी को भी लाभ मिलता रहे। व्यक्तियों से प्यार करें, वस्तु से नहीं। इसके विपरीत हम आचरण कर रहे हैं। घर में माता-पिता से स्नेह नहीं करते, अपनी वस्तु जैसे- फोन, गाड़ी आदि से अधिक प्यार करते हैं। संकल्प करें कि हम प्रतिदिन एक अच्छा कार्य करेंगे तो देश और समाज का भला हो जाएगा।

भगवान ने अपने आप को परदे में छुपा रखा है। जैसे कठपुतली का खेल दिखाने वाला अपने को परदे के पीछे छिपा रखकर खेल दिखाता है। हम खेल कठपुतली का देखते हैं पर परदे के पीछे छुपे व्यक्ति को नहीं देख सकते हैं। वैसे ही प्रभु ने अपने को माया के परदे के पीछे छिपा रखा है। वे हमें दिखाई नहीं देते अतः आसक्ति भगवान से नहीं जुड़ती। भगवान को देखने के लिए बुद्धि रूपी तीसरे नेत्र की आवश्यकता होती है। धन कमाना कठिन है, परन्तु भगवान को अनुभव करना आसान है। उसको अनुभव करने के लिए हमें सरल बनना पड़ेगा। यही बात हमारे लिए कठिन है। इसी प्रकार जीवन में लचीलापन आवश्यक है। लचीलेपन का अर्थ आचरण से गिरना नहीं है बल्कि अपनी बुद्धि और योग्यता का सही दिशा में सदुपयोग करना ही लचीलापन एवं सफलता का कारण बनता है। लचीला व्यक्ति हर अवसर का लाभ भली-भाँति उठा सकता है। कठोर आदमी अपनी कठोरता के कारण प्राय: टूट जाता है और जीवन में उदासी का कारण बन

जाता है। उदासी से शरीर में थकान आती है। उदासी से, थकान से एकाग्रता भंग होती है। यदि दु:खों से बचकर रहना चाहते हो तो आपको लचीला बनना पड़ेगा। लचीला होने का अर्थ है हर स्थिति में अपने आपको ढाल लेना। जो व्यक्ति हर स्थिति में ढल जाएगा तो वह अवश्य ही श्रेष्ठता प्राप्त कर लेगा। यदि व्यक्ति समाज में हाशिये पर नहीं आना चाहता है यानि समाज से कटकर नहीं रहना चाहता है तो उसमें लचीलेपन का गुण होना ही चाहिए। सृजन करना है तो सृजन के बांझकाल से बचना होगा अन्यथा आप ज्वालामुखी बनकर अपना और समाज का अहित कर बैठेंगे। अत: सावधान रहकर जीवन में लचीलेपन के गुण को अपनाएं। हमारे देश में 'कर्तव्य के प्रति निष्ठावान न होना, केवल अधिकार मांगने से नहीं चूकना'। ऐसी सोच भी लचीलेपन में खतरनाक तरीके से बाधक बन चुकी है।

एक 'पवित्र भाव' रखते हुए दूसरे की देह में रूचि रखना मनुष्य की कमजोरी नहीं मानी जाती बल्कि उसकी स्वाभाविक पहचान है। आजकल हमारे चारों ओर कुछ ऐसे दृश्य फिल्मों के माध्यम से, उत्तेजित विज्ञापनों के द्वारा सरलता से देखने को मिलते हैं। जिन्हें देखकर शरीर का अंसयमित होना बिल्कुल सरल और स्वाभाविक है। ऐसी अवस्था में शरीर कब कुचेष्टा पर उतर आए, कहना मुश्किल है। इसलिए हमें चाहिए कि हम दूसरों की देह में रूचि रखना छोड़कर अपने को स्वयं की आत्मा से जोड़ें। दूसरों की देह से बचने का यही एक मात्र उपाय है। हम अपना मान बढ़ाते हुए, दूसरे की देह का भी सम्मान करना सीखें, तभी 'पवित्र भाव' का जन्म होगा और जीवन में और अधिक लचीलापन आएगा, जो जीवन में हमारे लिए रक्षा कवच बन सकता है।

युवा और अध्यात्म :-

शरीर का बल, मनोबल, आत्मबल, अध्यात्म का बल ये चारों बल स्वामी दयानन्द, गुरु रामदास, स्वामी राम जैसे अच्छे चिंतनशील, मननशील, योगी, संन्यासी लोगों की संगति से हम सबमें आ सकते हैं। बड़ों के पास बैठकर भी उक्त गुणों का विकास किया जा सकता है। लेकिन आज का युवक बड़ों को महत्त्व नहीं देता। उसमें यह घमण्ड रहता है कि मैंने दादा जी से, पिता जी से व अन्य बड़ों से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अत: वह उनके साथ बैठना अच्छा नहीं समझता। इसी कारण आज के युवकों में सामाजिक अवगुण आते जा रहे हैं। उनमें रिश्तों का महत्व जन्म ही नहीं लेता। वर्तमान समय में 'यूज एण्ड थ्रौ' का प्रचलन बढ़ रहा है। विवाह में, किसी भी प्रोग्राम एवं आयोजनों में खाते-पीते समय प्लास्टिक प्लेट, गिलास, डोंगे आदि का प्रयोग करने के उपरान्त 'उपयोग करो और फैंको' की नीति देखने को मिलती है। इसी प्रकार व्यक्ति अपने हित के लिए दूसरे व्यक्ति का प्रयोग करने से नहीं चूकता है। इससे एक कदम आगे बढ़कर आदमी दूसरों का अपने लिए उपयोग करने पर, उनका दुरुपयोग भी करने लगा है। कुछ तो उनका शोषण करने पर भी उतर आते हैं। कोई व्यक्ति पहले अपने काम का था, परन्तु काम निकलने पर उसे भुला दिया जाता है। यदि वह अपने लिए खतरा बन जाए तो उसे आदमी मिटाने का भी प्रयत्न करने लगता है। हमें इस 'उपयोग करो और फैंकों' की प्रवृत्ति का व्यक्ति के लिए परित्याग करना होगा। अर्थात् जिन माँ-बाप का आपने उपयोग किया, उनका सम्मान अवश्य करना सीखें। मनुष्य और वस्तु में बड़ा अन्तर होता है। दोनों को एक समान समझने की कभी भूल ना करें। मनुष्य के भीतर की शक्ति संकट में आपके काम आ सकती है। उसे अनुपयोगी समझ कर मिटाने की चेष्टा न करें।

भारतीय संस्कृति में सहनशीलता एवं धैर्य का जो गुण है, उसे कायरता या कमजोरी नहीं मानना चाहिए बल्कि यह एक शक्ति है। इसी गुण को ग्रहण करके मैंने अपने अन्त:करण से जीवन में आए दु:खों एवं दर्दों का सामना करके शिक्षा प्राप्त की, जीवन में उन्नति पाई एवं ऊपर उठा। मैंने जीवन में सुख और दु:ख दोनों को वैराग्य भाव से अपनाया क्योंकि मैं यह जान चुका था कि अगर द्:खों से छुटकारा पाना है और सुखों की ओर जाना है तो सहनशीलता एवं धैर्य को अपनाना ही एक मात्र उपाय है, दूसरा कोई उपाय है ही नहीं। जो लोग दूसरों के बारे में भी सोचते हैं उनके लिए दु:ख और तकलीफ को सहन करते हैं, उन्हें कमजोर माना जाता है। यही मेरे साथ हुआ। मेरी यह धारणा थी कि जो आदमी दूसरों के काम आता है, वही मानवता है, वही उसका अव्वल दर्जे का गुण भी है। लेकिन आजकल जो स्वार्थी बन कर छोटी से छोटी बात पर लड़ने लगते हैं। केवल अपने ही बारे में सोचते हैं, उन्हीं को हीरो माना जाता है। मैं आज के युवकों को बताना चाहता हूॅं कि वे यदि दु:खों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो सहनशील एवं धैर्यवान बनें।

क्रोध, प्रशंसा, आलोचना विष की बेल : हम भारतीय एक आदत से ग्रस्त हैं। हम जीत की घोषणा बहुत पहले ही कर देते हैं। एक छोटी सी सफलता एवं अच्छी खबर में डूब जाते हैं। दूसरी तरफ एक-दो झटके खाकर गहरी पीड़ा एवं अवसाद पाल लेते हैं। बल्कि हमें एक परिपक्व व्यक्ति की तरह जीवन जीना चाहिए ताकि हम दूसरों को अपने क्रोध

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वामी दयानन्द और हिन्दू समाज

डॉ0 विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ, **drvivekarya@yahoo.com**

जो हिन्दू धर्म अपने आधुनिक मार्गदर्शकों की संकीर्णता और अदूरदर्शिता से आत्मावलम्बन, आत्मरक्षा, सामाजिक संगठन, स्वतंत्रता, देश भक्ति और स्वराज्य आदि मानुषिक और जातीय श्रेष्ठ गुणों की अनुभूति खोकर मुर्दे के समान हो चुका था, वह स्वामी दयानंद की जीवन प्रद शिक्षा से फिर से जीवित हो गया।

स्वामी दयानन्द पर कुछ अज्ञानी लोग यह कहकर आक्षेप लगा देते हैं कि स्वामीजी ने हिन्दू समाज को संकीर्ण बना दिया। स्वामी जी पर यह आक्षेप निराधार है क्योंकि हिन्दू समाज तो पहले से ही इतना संकीर्ण हो चुका था कि उसमें और अधिक संकीर्णता लाने का स्थान ही नहीं रहा था। सनातन धर्म के प्रसिद्ध पंडित नेकीराम शर्मा ने तेज अख़बार 17 फरवरी 1926 को इस आशय को कुछ ऐसे स्वीकार किया था- 'जो धर्म कभी समस्त संसार का अद्वितीय और असीम धर्म था, आज वह सिकुड़ते-सिकुड़ते कितने छोटे घेरे में परिमित कर दिया गया है।' इसके विपरीत स्वामी दयानंद ने हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर करने का जीवन भर प्रयास किया जो वेदों के ज्ञान को न जानने से और अन्धविश्वास और अज्ञान को मानने से हिन्दू समाज में समाहित हो गई थी। स्वामी जी ने किस प्रकार भागीरथ प्रयास कर हिन्दू समाज में नवजाग्रति लाने का प्रयास किया, आईये, इस पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालें।

1- हिन्दू समाज ने शूद्रों को शिक्षा देने और वेद का सन्देश सुनाने का भी कड़ा निषेध कर दिया था। आधुनिक भारत में स्वामी दयानंद ही प्रथम ऐसे उपदेशक हैं जिन्होंने शूद्रों को न केवल शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार दिलवाया, अपितु द्विजों के समान वेद को भी पढ़ने का अधिकार दिला कर हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर किया।

2- हिन्दू समाज शूद्रों के समान स्त्री जाति को भी शिक्षा से विमुख रखता था और उन्हें केवल गृह कार्य, संतान उत्पत्ति और चूल्हे चौके तक सीमित रखता था। स्वामी दयानंद ने न केवल प्राचीन विदुषियों जैसे गार्गी और मैत्रयी आदि का उदाहरण देकर नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलवाया अपितु उन्हें मातृ शक्ति के रूप में उचित सम्मान भी दिलवाया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

3- हिन्दूसमाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह और मिथ्या जाति-पाँति के छोटे घेरे में विवाह करने की प्रथा थी। स्वामी दयानंद ने ब्रह्मचर्यपूर्वक लड़का-लड़की का गुण-कर्म अनुसार, विस्तृत मानव समाज में विवाह और एक पति पत्नी व्रत का विधान करके हिन्दू समाज की संकीर्णता को दूर किया।

4- हिन्दू समाज में निर्दोष और अबोध बाल-विधवाओं को जन्म भर वैधव्य के महा कष्टप्रद जीवन में जबरदस्ती रखा जाता था। स्वामी दयानंद के विधवा विवाह को शास्त्र और युक्ति के अनुसार सिद्ध करके इस वंश नाशक कुप्रथा को जड़ से उखाड़ दिया। जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

5-हिन्दू समाज में जन्म मूलक या अनुवांशिक उच्चता के वृथाभिमान से वंशानुगत वर्ण-व्यवस्था मानी जाने लगी थी। स्वामी दयानंद ने मनुष्य मात्र को गुण-कर्म के अनुकूल वर्ण प्राप्ति का अधिकारी सिद्ध किया, जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

6 हिन्दू समाज में संगठन के विरोधी, मिथ्या जाति-पांति और छुआछूत के बंधन इतने दृढ़ और भयानक हो चुके थे, जिन पर चलकर हिन्दू जाति अपने ही धर्म को मानने वाले हिन्दू भाईयों से पशु से भी बुरा व्यवहार करती हुई दिन-प्रतिदिन मिटी जा रही थी। स्वामी दयानंद ने झूठी जाति-पांति और छुआ-छूत के मानसिक रोग को वैदिक ज्ञान की औषधि से दूर करके उन्हें संगठित होने की शिक्षा दी जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

7- हिन्दू समाज ने भूल से वैदिक सार्वभौम धर्म का द्वार वैदिक धर्म से पतित हुए मनुष्यों तथा अहिंदुओं के लिए एकदम बंद करके अपने को तथा अपने धर्म को एक छोटे घेरे में सीमित कर दिया था। स्वामी दयानंद ने देश सम्प्रदाय

और वंश के बिना भेद-भाव के प्रत्येक मनुष्य को उसका अधिकारी बतलाकर और सर्व साधारण को उसमें सम्मिलित होने का निमंत्रण देकर हिन्दूसमाज की संकीर्णता को दूर किया।

8- हिन्दू समाज में ज्ञान शून्य व्यर्थ क्रिया-कलापों और विश्वासों को ही धर्म समझा जाता था और अपने गुरुओं की कृपा से ही मुक्ति का मिलना मानकर अपने आपको विवशता और दासता के जीवन में रखा जाता था। स्वामी दयानंद ने मनुष्य मात्र के विचार और आचार की जन्मसिद्ध स्वतंत्रता की घोषणा करके सदाचार से आत्मज्ञान प्राप्ति के द्वारा मोक्ष का मिलना बतलाकर दासता के संकुचित जीवन से हिन्दू समाज को छुड़वाया।

9- हिन्दू समाज में वेद विरुद्ध यज्ञों और कल्पित देवताओं के नाम पर पशु-बलि, माँस-भक्षण और मद्य आदि का धर्म समझकर उपयोग होने लग गया था। स्वामी दयानंद ने वैदिक विधि का प्रचार करके प्राणी मात्र से अहिंसापूर्वक वर्तने और स्वास्थ्य व बुद्धि के नाशक नशों के भयानक दोषों को दूर करने का प्रयास किया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

10- हिन्दू समाज में एक ईश्वर के स्थान पर अवतार, गुरु, पीर व पैगम्बर आदि के रूप में अनीश्वर तथा अनेक ईश्वर पूजा के रूप में मनुष्य पूजा का प्रचार हो गया था। स्वामी दयानंद ने अवतार आदि की निस्सारता और अनेक ईश्वर के स्थान पर एक सच्चे सर्वव्यापक परमात्मा की सच्ची पूजा करनी सिखलाई जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

11- हिन्दू समाज में पारस्परिक घृणा फैलाने वाली छुआ-छूत के कारण एक साथ बैठ कर न खाना, एक दूसरे के हाथ का न खाना आदि का झमेला आरंभ हो गया था। स्वामी दयानंद ने चारों वर्णों को शुद्ध विधि से बने हुए भोजन के एक साथ बैठकर खाने का उपदेश देकर इस भ्रम को मिटाया जिससे हिन्दू समाज की संकीर्णता दूर हुई।

सारांश यह है कि जो हिन्दू धर्म अपने आधुनिक मार्गदर्शकों की संकीर्णता और अदूरदर्शिता से आत्मावलम्बन, आत्मरक्षा, सामाजिक संगठन, स्वतंत्रता, देश भक्ति और स्वराज्य आदि मानुषिक और जातीय श्रेष्ठ गुणों की अनुभूति खोकर मुर्दे के समान हो चुका था, वह स्वामी दयानंद की जीवन प्रद शिक्षा से फिर से जीवित हो गया।

क्या यही संकीर्णता है? जिसे स्वामी दयानंद ने हिन्दू समाज में पैदा कर दिया? तब तो हमें ऐसी संकीर्णता पर अभिमान है। ❑❑❑

सहिष्णुता का पाठ

जब हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण करके द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत की थी तो उस समय पोलैंड के सैनिकों ने अपने ५०० महिलाओं और करीब २०० बच्चों को एक शीप में बैठाकर समुद्र में छोड़ दिया और कैप्टन से कहा कि इन्हें किसी भी देश में ले जाओ, जहाँ इन्हें शरण मिल सके। अगर जिन्दगी रही, हम बचे रहे या ये बचे रहे तो दुबारा मिलेंगे।

पांच सौ शरणार्थी पोलिस महिलाओं और दो सौ बच्चों से भरा वह जहाज ईरान के सिराफ बंदरगाह पहुंचा, वहां किसी को शरण क्या उतरने की अनुमति तक नहीं मिली। फिर सेशेल्स में भी नही मिली, फिर अदन में भी अनुमति नही मिली। अंत में समुद्र में भटकता-भटकता वो जहाज गुजरात के जामनगर के तट पर आया।

जामनगर के तत्कालीन महाराजा 'जाम साहब दिग्विजय सिंह' ने न सिर्फ पांच सौ महिलाओं, बच्चों के लिए अपना एक राजमहल- जिसे हवामहल कहते हैं- रहने के लिए दिया बल्कि अपनी रियासत में बालाचढ़ी में सैनिक स्कूल में उन बच्चों की पढाई लिखाई की व्यवस्था की। ये शरणार्थी जामनगर में कुल नौ साल रहे।

उन्हीं शरणार्थी बच्चों में से एक बच्चा बाद में पोलैंड का प्रधानमंत्री भी बना। आज भी हर साल उन शरणार्थियों के वंशज जामनगर आते है और अपने पूर्वजों को याद करते हैं।

पोलैंड की राजधानी वारसा में कई सडकों का नाम महाराजा जाम साहब के नाम पर है, उनके नाम पर पोलैंड में कई योजनायें चलती हैं। हर साल पोलैंड के अखबारों में महाराजा जाम साहब दिग्विजय सिंह के बारे में आर्टिकल छपता है। प्राचीन काल से भारत, वसुधैव कुटुम्बकम, सहिष्णुता का पाठ दुनिया को पढ़ाते आया है और आज कल के नवसिखिये नेता आदि लोग, भारत की सहिष्णुता पर प्रश्न चिह्न लगाते फिरते हैं।

जय जननी, जय भारतभूमि!!

यही है सनातन धर्म! यही है हमारा भारत देश।

साभार : प्रो० के के मिश्रा

शिव और शिवरात्रि : एक दृष्टि

डॉ० श्वेतकेतु शर्मा, पूर्व सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०, केलाबाग, सावित्री सदन, बरेली (उ० प्र०) मो०- 9412289393

पौराणिक मान्यता के आधार पर शिव व शिवरात्रि का स्वरूप इस प्रकार है- शिव एक देवता है। वह कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं, हिमालय की पुत्री पार्वती या उमा से इनका विवाह हुआ था। दायें हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में डमरु है। सिर पर गंगा और माथे पर अर्ध चन्द्रमा है। उनके तीन नेत्र हैं। वृषभ या नादिया उनकी सवारी है, गले में मुण्ड माला है, वे बाघम्बर धारण किए हैं। गले में सर्प लिपटे रहते हैं, देवों के कष्ट हरण के लिए विषपान किया है इत्यादि, परन्तु शिव व शिवरात्रि के गहन विचार की वास्तविकता में जायेंगे तो यह अत्यन्त भिन्न प्रतीत होता है, आइए इसी को प्रतीक मानकर समीक्षा करें-

शिवरात्रि= शिवरात्रि लौकिक व्यवहार में तत्पुरुष समास है, जिसका अर्थ है शिव की रात्रि। शिव क्या है, जिसकी रात्रि शिवरात्रि कही गयी है? महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के १०० नामों में से शंकर और शिव के अर्थ इस प्रकार किये हैं- 'यः शं कल्याणं, सुखं करोति स शंकरः।।' अर्थात् जो कल्याण एवं सुख देने वाला है, इससे ईश्वर का नाम शंकर है। यही अर्थ शिव का है। यजुर्वेद १६/४१ में ऐसे परमेश्वर को शिव ही नहीं शिवतर, शिवतम, मयोभूः, मयस्कर आदि नामों से स्मरण कर नमन किया है। जो साधक ज्योतिष्मयी, स्निग्ध, नीरव, शान्तिमय वातावरण से युक्त रात्रि में शिव या शंकर बनने की साधना करता है, वह कल्याणकारी रात्रि शिवरात्रि है। शिव या शंकर से संबंधित विभिन्न प्रतीक चिह्नों को जोड़ कर महिमार्मंडित किया जा रहा है, परन्तु यदि उन प्रतीक चिह्नों की सार्थकता का चिन्तन मनन करें तो ये किसी व्यक्ति विशेष का आवरण नहीं, परन्तु कल्याणकारी मार्ग पर ले जाने का रास्ता हो सकता है-

(1)-'कैलाश' : कैलाश क्या है? (अमर कोष व्याख्या रामाश्रयी टीका पृष्ठ ३५) के अनुसार कै लास= कैलास; लस् श्लेषणक्रीडनयो धातु से इसकी सिद्धि होती है। 'कम् इति जलम् ब्रह्म, तस्मिन् के जले ब्रह्मणि लासः लसनमस्य इति कैलासः।'

क अर्थात् ब्रह्म में क्रीड़ा करने का जिसका स्वभाव हो। यहाँ क से अभिप्राय ब्रह्म या ब्रह्मजल से है, क्योंकि 'क' नाम ब्रह्म का है। परम योगी साधक उस ब्रह्मजल में निमग्न रहता है। परमानन्द की प्राप्ति होने से वह कैलाश में सदा स्थिर रहता है। यही उसका कैलाशवास है।

(2)-पर्वत : पर्वत दृढ़ता का प्रतीक है। साधक पर्वत की भाँति अपने व्रत में अड़िग रहता है। 'पर्वणि शुभे कर्मणि शुभ मति स पर्वतः।

(3)-त्रिनेत्र : यह तीसरा नेत्र उसके माथे में स्थित है जो ज्ञान नेत्र का प्रतीक है। इसी ज्ञान नेत्र से वह काम वासना को भस्म कर देता है। अतः वे कभी कामासक्त होकर अनाचार नहीं करते।

(4)-त्रिशूल : त्रिशूल=तीन शूल=कष्ट अर्थात् तीन कष्ट (१) आधिदैविक (२) आधिभौतिक (३) आध्यात्मिक। ये तीन कष्ट हैं। ये तीनों कष्ट या शूल काँटों के समान कष्टदायक हैं। इसलिए त्रिशूल हैं। परम योगी शिव इन तीनों कष्ट=दुःखों को अपनी दायीं मुट्ठी में कर लेते हैं। यानि अपने वश में कर लेते हैं।

(5)-डमरु : शिव के बायें हाथ में डमरु है। डमरु शब्द संस्कृत के दमरु का अपभ्रंश है जो दो शब्दों से बना है। 'दम' (दमन करना) 'रु' (ध्वनि) अर्थात् दमन=संयम रूपी ध्वनि व्यक्त होती रहती है, यानि वह महान संयमी है।

(6)-गंगा : शिव के माथे पर गंगाजी हैं, मस्तकवर्ती यह गंगा 'ज्ञान गंगा' है। इसलिए सिद्ध है कि शिव ज्ञानी हैं।

(7)-चन्द्रमा : शिव के सिर पर अर्द्ध चन्द्रमा है। यह चन्द्रमा आनन्द और आशा एवं सौहार्द्र का प्रतीक है।

(8)-विषधर : शिव के चारों ओर विषधर लिपटे हुए हैं। ये विषधर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, ईर्ष्या, द्वेष, पक्षपात आदि के प्रतीक हैं, जिन्हें योगी शिव अपने अन्तःकरण से बाहर फेंक कर अनासक्त भाव से विचरण करते हैं।

(9)-हलाहल पान करने से नीलकंठ है : शिव का हलाहल पान करना इस बात का प्रतीक है कि वह विष समान कटुतर बातों को अपने कंठ से नीचे नहीं जाने देता अर्थात् उनका हृदय नितान्त निर्मल है।

(11)-मुण्डमाला : शिव मुण्डमाला धारण करते हैं। इस बात का प्रतीक है कि उनके कई जन्म हो चुके हैं।

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

समस्या

तकनीक से आजादी

❑डॉ॰ संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी 09996388169/8787826168
जवाहर ने वि, महेंद्रगंज, दक्षिण पश्चिम गारो पहाड़ियाँ, मेघालय-७९४१०६

मेरे भाई के साले की मृत्यु हो गयी, मेरा भाई काफी दु:खी था। मजाक में ही सही सामान्यत: कहा जाता है कि साली और साले अपने घर वालों से भी प्रिय होते हैं। हों भी क्यों न? आखिर वे पत्नी के बहन-भाई हैं। हम अपने आपको और अपने बहन-भाइयों को नजरअंदाज कर सकते हैं किंतु पत्नी को और उसके संबन्धियों को नजरअंदाज करना हमारे तो क्या? हमारी रूह के भी वश की बात नहीं होती। अब ऐसी स्थिति में उसका दु:खी होना लाजमी था किंतु मेरे पिताजी ने उसके साले पर जो टिप्पणी की, वह कुछ हद तक नाराज हो गया। बात यह थी कि उसकी मृत्यु का कारण अजीबोगरीब था। उसकी मृत्यु गाने सुनने के कारण हुई थी। अब आप सोचिए गाने सुनने से भी किसी की मृत्यु हो सकती है? आप विश्वास करेंगे? किंतु आपको विश्वास करना ही होगा। सांच को आंच कहां? तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता।

जी हाँ! उसकी मृत्यु गाने सुनने के कारण ही हुई थी। हाँ! यह अलग बात है कि वह गाना, रेल की पटरी पर बैठकर मोबाइल से सुन रहा था। यही नहीं, मोबाइल के गाने सुनने का मजा भी पूरा अर्थात् कानों में लीड लगाकर लिया जा रहा था। मजा में सजा का मुहावरा तो आपने सुना ही होगा। मजे लेंगे तो उसकी कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। वर्तमान में खोज करने से ऐसे उदाहरण बहुतायत में मिल जायेंगे। मोबाइल की गुलामी के कारण हर वर्ष अनेकों शौकीन लोग स्वर्गवासी होने का लाभ प्राप्त करते हैं। यही नहीं, मोबाइल की कृपा से अनेकों पति-पत्नी एक-दूसरे से तलाक लेकर स्वतंत्रता के आनंद की अनुभूति करने में भी सफलता प्राप्त करते हैं।

मेरी एक सहयोगी कर्मचारी श्रीमती अनामिका जी हैं। उनको मोबाइल से इतना प्यार है कि वे जब भी नजर आती हैं, मोबाइल से चिपकी नजर आती हैं। कई बार मुझे लगता है कि उन्हें मोबाइल की बैटरी दिन में कितनी बार चार्ज करनी पड़ती होगी? शायद उनके मोबाइल में कोई ऐसी तकनीक हो कि बात करने से ही वह चार्ज हो जाता हो। वे कक्षा में हों, अपने परिवार के साथ हों, बाजार में हों, रास्ते में हों, किसी सभा में हों या मीटिंग में हों, वे किसी के साथ नहीं होती, केवल मोबाइल के साथ होती हैं।

कार्यस्थल पर काम, अजी क्या बात करते हो? हर समय मोबाइल पर बिजी रहना कोई कम काम है? कितनी बड़ी उपलब्धि है? किसी की क्या मजाल है, कोई उनसे बात करने के लिए भी समय ले सके। यह किसी एक महिला की कहानी नहीं हैं। केवल काल्पनिक उदाहरण मात्र है। आप अपने आसपास नजर दौड़ाएंगे तो ऐसे तकनीकी के गुलाम अनेक-महिला पुरुष नजर आ जाएंगे। वे बेचारे दया के पात्र हैं। उनका परिवार, उनके संबन्धी व उनके मित्र उनके साहचर्यगत आनंद से वंचित रह जाते हैं। अत: वे सभी दया के पात्र हैं। ऐसे महिला और पुरुषों को तकनीकी गुलामी से आजादी मिले। इस तरह की शुभकामना व्यक्त करने के सिवाय और कोई चारा हमारे पास भी नहीं है। जब तक वे आजादी नहीं चाहते , जब तक वे उस लत को पसंद करते हैं, कोई उनकी आजादी को सुनिश्चित नहीं कर सकता। अब भाई कोई सो रहा हो तो उसे जगाने का प्रयत्न आप कर सकते हैं किंतु कोई बेहोश ही हो जाए, उसे कैसे जगायेंगे? उसको तो इलाज की ही आवश्यकता होती है। तकनीक के नशे की लत एक प्रकार से नसेड़ी को कोमा जैसी स्थिति कर देती है। कोमा या कोना एक ही बात है।

वर्तमान समय को कलयुग कहा जाता है। कल युग अर्थात् कल पुर्जों का युग। सरल अर्थ में कहें तो मशीनी युग। वर्तमान में मशीन मानव पर हावी होती जा रही हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि हम सब मानव रूपी मशीन ही हैं। रोबोट बनाते बनाते हम स्वयं ही रोबोट बन गए हैं।

तकनीक प्रधान युग में मानव की प्रधानता के स्थान पर तकनीक स्थापित हो गयी है। वर्तमान समय में विद्यार्थी को अपने अध्यापकों से अधिक विश्वास गूगल गुरु पर है। हो भी क्यों न? अध्यापक भी अपने विद्यार्थियों को नजर अंदाज कर कक्षाओं में भी मोबाइल पर या लेपटॉप पर चिपके नजर आते हैं। यहाँ तक कि सार्वजनिक प्रार्थना सभाओं में जहाँ, सैकड़ों लोग खड़े हैं। वे सबको नजरअंदाज कर सभी को ठेंगे पर बिठाते हुए मोबाइल पर बिजी रहते हैं। कई बार तो ये लोग विभागीय औपचारिक बैठकों में विभागीय

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

मद्यपान पाप भी है एवं हानिकारक भी

❑**श्री रामनिवास लखोटिया,** अध्यक्ष शाकाहार परिषद, दिल्ली

आजकल पारिवारिक कलह दिन पर दिन बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। इसी प्रकार सामाजिक झगड़े फसाद पहले की अपेक्षा अधिक हो रहे हैं। दिन पर दिन नये-नये अस्पताल खुल रहे हैं और डाक्टर भी दिन-प्रतिदिन ज्यादा कमाई कर रहे हैं। नई-नई बिमारियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। दुनिया के अन्य देशों में पहले के मुकाबले मोटापा बढ़ रहा है। इन सब विसंगतियों और झगड़े फसादों का एक प्रमुख कारण है, मद्यपान। अर्थात्, शराब का चलन। धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से यह महापाप भी है, इन पर आपका ध्यान आकर्षित किया है ताकि हम अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने में सफल रह सकें और अपने आसपास सामाजिक और पारिवारिक झगड़े फसादों को रोक सकें।

ग्रन्थों में मद्यपान निन्दनीय है और महापाप भी:

सभी प्रकार के नशे स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। विशेषकर, मद्यपान या मदिरापान या शराब पीने की प्रवृत्ति और भी घातक है क्योंकि यह स्वभावत: मांसाहार और विषय विकार के प्रति मनुष्य को आकृष्ट करती है। कई बार कुछ व्यक्ति यह प्रश्न करते हैं कि आखिर मद्यपान को इतना निन्दनीय क्यों गिना जाता है। इस सम्बन्ध में धर्मग्रन्थों के उद्‌गार मनन करने योग्य हैं। सभी धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है। निरुक्त के अनुसार सात महापापों में शराब पीना भी सम्मिलित है (निरुक्त ६/२७)। इसी प्रकार जैन धर्म में पांच महापापों में शराब भी एक है। चरक संहिता में लिखा हुआ है-''शराब सभी कुकर्म कराने वाला और देह को नाश करने वाला है। शराब पीने वालों के लिए कोई भी औषधी असर नहीं करती है।'' सृष्टि के प्रारम्भ में वेद ने मानव को सावधान करते हुए उपदेश दिया था कि परस्त्री गमन, ब्रह्म हत्या, गर्भपात, निन्दनीय कार्यों में बार-बार लगे रहना, मद्य पीना, चोरी करना और असत्य भाषण, इन पापों को करने वाले दुष्टों का सहवास भी न करना सप्त मर्यादा कहलाती है। अर्थात् इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन जो कोई व्यक्ति करता है वह पापी होता है। और, जो धैर्य से इन पापों को छोड़ देता है, वह नि:संदेह जीवन का स्तम्भ होता है। इसीलिए 'शतपथ ब्राह्मण' में लिखा है-''अनृतं पाप्मा तम: सुरा'' शराब असत्य की, पाप की, अंधकार की और अज्ञान की जड़ है।'' शराब की निंदा करते हुए महात्मा बुद्ध ने जो भी कुछ कहा वह ध्यान देने योग्य है। भगवान बुद्ध ने कहा कि यदि तुम्हारे सामने सिंह भी आ जाए तो तुम भयभीत न होना, क्योंकि वह पराक्रम की परीक्षा है। लेकिन शराब से हमेशा भयभीत रहना, क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है। इसी प्रकार छान्दोग्योपनिषद (५/१०/९) में मदिरापान करने वालों को महापापी बताते हुए कहा गया है-

''स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबंश्च गुरोस्तल्पमावसन्ब्रह्महा
चैते पतन्ति चत्वार: पंचमश्चाचरंस्तैरिति।''

इसका अर्थ यह है कि स्वर्ण की चोरी करने वाला, मदिरा (शराब) पीने वाला, गुरु पत्नी गमन करने वाला, ब्राह्मण की हत्या करने वाला-ये चारों महापापी हैं और इनका संग करने वाला पांचवाँ महापापी है। इस प्रकार धार्मिक ग्रन्थों से यह सिद्ध होता है कि मदिरापान सर्वथा निन्दनीय है और यह मांसाहार से भी अधिक पतन करने वाला है। मदिरापान को धर्म शास्त्रों में हानिकारक इसलिए कहा गया है क्योंकि इससे अन्त:करण में रहने वाले धर्म के अंकुर नष्ट हो जाते हैं।

विद्वानों की दृष्टि में मद्यपान निन्दनीय है :

महान चिन्तक ग्लेडस्टोन के अनुसार युद्ध, अकाल और महामारी ने मिलकर मानव-जाति का इतना अहित नहीं किया, जितना अकेली शराब ने किया है। शराब के नशे की आदत से उत्पन्न आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दुष्प्रभावों का दायरा अत्यन्त व्यापक है। शराब के भयंकर परिणामों की ओर संकेत करते हुए विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है कि-'जिस प्रकार किसी भी राष्ट्र व जाति तथा समाज को उन्नत बनाने के लिए उत्तम साहित्य संजीवनी बूटी है, उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र व जाति को निस्सार एवं निस्तेज बनाना हो तो उस राष्ट्र व जाति में शराब की आदत डाल देनी चाहिए।' इसी तरह से महात्मा गांधी ने भी कहा है-'शराब सभी पापों की जननी है।' कबीर जी ने मांस और मदिरापान की निंदा में कई छन्द लिखे हैं। उनका एक प्रसिद्ध छन्द नीचे दिया जा रहा है--

मांस भखै मदिरा पिवै, धन विस्वा सों खाय।
जूआ खेलि चोरी करै, अन्त समूला जाये।।

अर्थात् जो मांस खाता, मदिरा पीता, वेश्या के साथ भांडपन करके कमाया हुआ धन खाता, जुआ खेलता और चोरी करता है, वह अन्त में मूल सहित नष्ट हो जाता है। अंग्रेज लेखक मिल्टन का कथन है कि-'विश्व की सारी सेनायें संयुक्त रूप से इतने मनुष्यों और सम्पत्ति को नष्ट नहीं करती, जितनी कि अकेली मदिरा ने नष्ट किया है।' हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक मुन्शी प्रेमचन्द ने कहा था-'जहाँ सौ में से अस्सी आदमी भूख से मरते हों, वहाँ शराब पीना, गरीबों का खून पीने के समान है।' शेक्सपीयर ने शराब की निंदा इन शब्दों में की-'नशे में चूर व्यक्ति की सूरत उसकी माँ को भी बुरी लगती है।' शेखसादी कहते हैं-'शराब पीना और कुछ नहीं है, केवल अपनी इच्छा से पागल बनना है।' मदिरा का एक प्याला मनुष्यों को बुद्धिहीन बना देता है और दूसरा प्याला पागल बना देता है, तीसरा प्याला मनुष्यों को बुद्धिहीन बना देता है और अर्थात् चेतनाहीन बना देता है। जापानी कहावत है कि आदमी पहले शराब पीते हैं, फिर शराब आदमी को पीती है अर्थात् बार-बार पीने की इच्छा होती है और अंत में शराबी को ही पीने लग जाती है। इस प्रकार संसार के महापुरुषों, लेखकों आदि ने मद्यपान की निंदा की है। अत: यह सर्वथा त्याज्य है।

मद्यपान से हानियाँ :

कई बार मद्यपान करने वाले यह प्रश्न उठाते हैं कि आध्यात्मिक लोगों को मद्यपान के विरूद्ध क्या आपत्ति है! इसका उत्तर यह है कि आध्यात्मवाद मनुष्य के व्यवहार को श्रेष्ठ बनाना चाहता है और उसके कर्मों को सुधारना चाहता है ताकि उसके अपने जीवन में भी शांति बनी रहे और वह दूसरों के लिए भी दु:ख का कारण न बने। इसलिए आध्यात्मवाद ऐसे मार्ग को बताता है जिससे उसकी चेतना और निर्णय शक्ति बनी रहे, उसका विवेक जाग्रत हो, उसका मन संतुलित रहे और उसका कर्म-इन्द्रियों पर नियंत्रण बना रहे। परन्तु मद्यपान का प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क, विवेक, मानसिक संतुलन और कर्मेन्द्रियों पर इसके बिल्कुल विपरीत ही पड़ता है। इसीलिए शरीर-विज्ञान-वेत्ता कहते हैं कि शराब सारे तन्त्रिका तंत्र पर बहुत हानिकारक प्रभाव डालती है। मद्य में जो अल्कोहल होती है उसकी मात्रा थोड़ी भी अधिक होने से मस्तिष्क की संयम शक्ति बहुत घट जाती है और वह अपनी वाणी पर भी नियंत्रण नहीं रख सकता। इसका परिणाम यह होता है कि वह अधिकाधिक ऊंचा-ऊंचा या अनर्गल ही बोलने लगता है। जिससे दूसरों के साथ उसका झगड़ा भी हो जाता है। ऐसा ज्यादातर देखने में आता है कि मद्यपान करने वालों की निर्णय शक्ति और मानसिक संतुलन मद्यपान के समय समाप्त हो जाता है। मद्यपान करने वाला व्यक्ति भावावेश में आकर स्वच्छन्दतापूर्ण आचरण करता है। इस प्रकार उसके नैतिक पक्ष को काफी हानि होती है। इसके अलावा मद्यपान करने वाला कामातुर हो उठता है और अपने व्यवहार से अपनी धर्मपत्नी से गाली-गलोच करता है, मारता है, पीटता है। मध्यम श्रेणी और गरीब तबके के व्यक्ति जो शराब पीते हैं उनके घरों से बराबर यह शिकायत सुनने में आती है कि उनके घर में शराब पीने वालों के कारण उनकी धर्मपत्नी और घर वाले रुष्ट हो जाते हैं और अड़ोसी-पड़ोसी उस व्यक्ति को चरित्रहीन मानने लगते हैं।

मद्यपान का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव :

शराब पीने के कुछ ही देर बाद उसमें मौजूद अल्कोहल रक्त में सम्मिलित होकर रक्त कोशिकाओं के माध्यम से सारे शरीर में फैल जाता है। अल्कोहल से हमारा तात्पर्य ईथाइल अल्कोहल से है। बहुधा मिलावटी शराब में अत्यधिक विषाक्त मिथाइल अल्कोहल भी पाया जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार की शराब में विभिन्न मात्रा में अल्कोहल पाया जाता है। जैसे देशी शराब में 35 से 50 प्रतिशत, बियर में 4 से 8 प्रतिशत, स्प्रिट में 40 से 50 प्रतिशत, वाइन में 8 से 15 प्रतिशत यह पाया जाता है। केन्द्रीय स्नायु तंत्र शराब के प्रभाव से कुन्द (डिप्रेस्ड) हो जाता है। स्नायु तंत्र के उच्च केन्द्रों पर रोक लगने पर मनुष्य कुछ समय के लिए खुशहाली का अनुभव करता है लेकिन वह आसानी से क्रोधित हो जाता है और बेवजह हंसता है तथा बातें करता है। उसका व्यवहार असामाजिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी अपराध कर सकता है। विटामिन 'बी' समूहों की कमी, आंखों पर दुष्प्रभाव, हृदय गति का तीव्र होना, गैस्ट्राइटिस और अल्सर आदि का बनना, यकृत की खराबी होकर असाध्य बीमारी (सिर्होसिस आफ लीवर) होने की संभावना बढ़ना, आदि शराब के नशे के दुष्परिणाम हैं। शराब के नशे वाले व्यक्ति प्राय: अपच, अनिद्रा, पौरूषहीनता आदि गंभीर रोगों के शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार शराब से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से भी यह हानिकारक है।

मदिरापान मांसाहार है :

भारत में यह दुर्भाग्य की बात है कि कई व्यक्ति जो शाकाहारी हैं वे मदिरापान करते हैं। कई बार हमने शाकाहारी परिवारों में ऐसे नवयुवकों को यह कहते हुए सुना है कि

शेष पृष्ठ ३२ पर)

वीर अमर सिंह राठौर : इतिहास कथा

गुलामी का कारण

❑विशन पाल सिंह चौहान

मुगल बादशाह शाहजहाँ लाल किले में तख्त-ए-ताऊस पर बैठा हुआ था। तख्त-ए-ताऊस काफी ऊँचा था। उसके एक तरफ थोड़ा नीचे अगल-बगल दो और छोटे-छोटे तख्त लगे हुए थे। एक पर मुगल वजीर दिलदार खां बैठा हुआ था और दूसरे पर मुगल सेनापति सलावत खां बैठा था। सामने सूबेदार- सेनापति -अफसर और दरबार का खास हिफाजती दस्ता मौजूद था।

दरबार में इंसानों से ज्यादा कीमत बादशाह के तख्त-ए-ताऊस की थी। तख्त-ए-ताऊस में ३० करोड़ रुपए के हीरे और जवाहरात लगे हुए थे। इस तख्त की भी अपनी कथा-व्यथा थी। तख्त-ए-ताऊस का असली नाम मयूर सिंहासन था। ३०० साल पहले यही मयूर सिंहासन देवगिरी के यादव राजाओं के दरबार की शोभा था। यादव राजाओं का सदियों तक गोलकुंडा के हीरों की खदानों पर अधिकार रहा था। यहां से निकलने वाले बेशकीमती हीरे, मणि, माणिक, मोती-मयूर सिंहासन के सौंदर्य को दीप्त करते थे। समय चक्र पलटा। दिल्ली के क्रूर सुल्तान अलाउदद्दीन खिलजी ने रामचंद्र पर हमला करके अरबों की संपत्ति के साथ मयूर सिंहासन भी लूट लिया। इसी मयूर सिंहासन को फारसी में तख्त-ए-ताऊस कहा जाने लगा।

दरबार का अपना सम्मोहन होता है और इस सम्मोहन को राजपूत वीर अमर सिंह राठौर ने अपनी पद चापों से भंग कर दिया। अमर सिंह राठौर-- शाहजहां के तख्त की तरफ आगे बढ़ रहे थे। तभी मुगलों के सेनापति सलावत खां ने उन्हें रोक दिया।

सलावत खां- ठहर जाओ, अमर सिंह जी! आप ८ दिन की छुट्टी पर गए थे और आज १६वें दिन तशरीफ लाए हैं।

अमर सिंह- मैं राजा हूँ। मेरे पास रियासत है, फौज है। किसी का गुलाम नहीं।

सलावत खां- आप राजा थे। अब हम आपके सेनापति हैं। आप मेरे मातहत हैं। आप पर जुर्माना लगाया जाता है। शाम तक जुर्माने के ७ लाख रुपए भिजवा दीजिएगा।

अमर सिंह- अगर मैं जुर्माना ना दूँ!

सलावत खां- (तख्त की तरफ देखते हुए) हुजूर, ये काफिर आपके सामने हुकूम उदूली कर रहा है।

अमरसिंह के कानों ने काफिर शब्द सुना। उनका हाथ तलवार की मूठ पर गया। तलवार बिजली की तरह निकली और सलावत खां की गर्दन पर गिरी। मुगल सेनापति सलावत खां का सिर जमीन पर आ गिरा। अकड़ कर बैठे सलावत खां का धड़ धम्म से गिर गया। दरबार में हड़कंप मच गया। वजीर फौरन हरकत में आया। वह बादशाह का हाथ पकड़कर भागा और उसे सीधे तख्त-ए-ताऊस के पीछे मौजूद कोठरीनुमा कमरे में ले गया। दुबक कर वहां मौजूद खिड़की की दरार से वजीर और बादशाह दरबार का मंजर देखने लगे।

दरबार की हिफाजत में तैनात ढाई सौ सिपाहियों का पूरा दस्ता अमर सिंह पर टूट पड़ा था। देखते ही देखते-- अमर सिंह ने शेर की तरह सारे भेड़ियों का सफाया कर दिया।

बादशाह- हमारी ३०० की फौज का सफाया हो गया, या खुदा!

वजीर- जी जहाँपनाह!

बादशाह- अमर सिंह बहुत बहादुर है, उसे किसी तरह समझा बुझाकर ले आओ। कहना हमने माफ किया!

वजीर- जी जहाँपनाह! हुजूर, लेकिन आँखों पर यकीन नहीं होता, समझ में नहीं आता- अगर हिंदू इतना बहादुर है तो फिर गुलाम कैसे हो गया?

बादशाह- अच्छा, सवाल वाजिब है। जवाब कल पता चल जाएगा।

अगले दिन बादशाह का दरबार सजा।

शाहजहां- अमरसिंह का पता चला।

वजीर- नहीं जहाँपनाह, अमरसिंह के पास जाने का जोखिम कोई नहीं उठाना चाहता है।

शाहजहां- क्या कोई नहीं है जो अमर सिंह को यहां ला सके?

दरबार में अफगानी, ईरानी, तुर्की-बड़े-२ रुस्तम-ए-जमां मौजूद थे। पर कल अमरसिंह के शौर्य को देखकर सबकी हिम्मत जवाब दे रही थी। आखिर में एक राजपूत आगे बढ़ा- अर्जुन सिंह।

अर्जुन सिंह- हुजूर आप हुक्म दें, मैं अभी अमरसिंह को ले आता हूँ।

बादशाह ने वजीर के कान में कहा- यही तुम्हारे कल के सवाल का जवाब है। हिंदू बहादुर है लेकिन इसीलिए गुलाम हुआ- देखो, यही वजह है।

अर्जुनसिंह अमर सिंह के साले थे। अर्जुन सिंह ने अमर सिंह को धोखा देकर उनकी हत्या कर दी। अमर सिंह नहीं रहे लेकिन उनका स्वाभिमान इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में प्रकाशित है। इतिहास में ऐसी बहुत सी कथाएँ हैं जिनसे सबक लेना आज भी बाकी है।

- शाहजहाँ के दरबारी, इतिहासकार और यात्री अब्दुल हमीद लाहौरी की किताब बादशाहनामा से ली गई ऐतिहासिक कथा।

(अलार्म इण्डिया न्यूज से साभार)

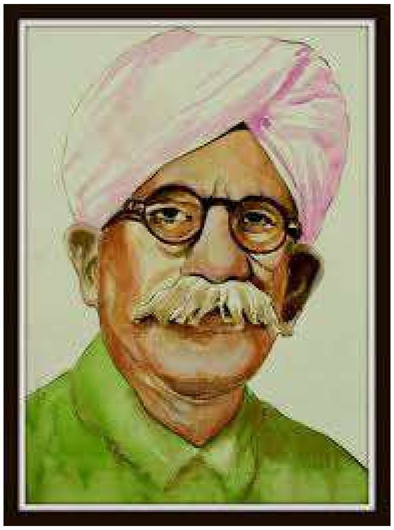

धर्म और अधर्म

व्याख्याता : शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचंद्र देहलवी जी

प्रस्तुति : **मिलन आर्य 'अवत्सार'** जयपुर

पण्डित रामचंद्र देहलवी आर्यसमाज के मूर्धन्य दार्शनिक और शास्त्रार्थ महारथी थे।अपका जन्म सन 1881 में नीमच छावनी में हुआ था। आपने २ फरवरी सन 1968 की रात्रि को नश्वर देह का त्याग किया।

धर्म- जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं। -महर्षि दयानन्द

आइये, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सबसे पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वत: सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकल धर्मात्मा नहीं समझा जा सकता। बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया में मिलेंगे, जिनका ईश्वर में विश्वास नहीं, परन्तु वे भी सृष्टि नियमों को मानते हैं और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नहीं कहे जा सकते, चूँकि उन्होंने नियामक के आवश्यक अंग को नहीं माना जिसके बिना, किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेषकर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता है। प्रत्येक समय यह आवश्यक नहीं कि कार्य और कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया में कहीं ऐसा नियम होता कि दोनों एक ही साथ होते तो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता ही न होती।

जैसे बादलों को देखकर होने वाली वर्षा का और हुई वर्षा को देखकर उसके कारण रूप बादलों का अनुमान होता है, इसी प्रकार दु:ख को देखकर पाप-कर्मों का, और पापकर्मों को देखकर दु:खों का अनुमान होता है। यदि कोई दु:खों को देखकर पाप-कर्मों का अनुमान न करे, या सन्तान को देखकर माता-पिता का, तो उसको पूर्ण ज्ञानी नहीं कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि नियमों को देख कर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जायेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नहीं, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है? चूंकि ध र्मात्मा के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मों की हो तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शंका करे कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नहीं करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वयं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि चेतन कर्ता उसको अमल में न लाते, जैसे कि ताजीरात हिन्द किसी अपराधी का कुछ नहीं कर सकती, जब तक कि पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको उसके अपराध के अनुसार दण्ड न दे दे । इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वयं अमल में लाए बिना कुछ नहीं कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानते हैं लेकिन चलाने वाला नहीं मानते, उनको यह विचारना चाहिए कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड़ होने से स्वयं न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वयं स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किए, न कोई नियम बना सकता है, न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी, जो नियम बनाता या चलाता है, उसको भी वह अन्य पुरुषों की सहायता से ही कार्यरूप में परिणत करता

है। कई स्थानों पर स्वयं अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा कभी-कभी बिना किसी इच्छा के स्वयं ठोकर लग जाती है तथा भोजन करते समय दांतों के तले जीभ कटकर कष्ट देती है। जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी-कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नहीं रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होने के कारण इकला ही सब नियमों को बनाता और स्वयं उन्हें चलाता है, यह हममें और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन सी मानी जाय? मुसलमान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई भाई बाईबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सब पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सबको ईश्वर की आज्ञा नहीं कहा जा सकता। ईश्वर आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भाँति सार्वभौम हो, एकदेशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यों के लिए हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो तथा उसके दया, न्यायादि गुणों के विरुद्ध न हो, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपात रहित न्याय-

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे और वह पक्षपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्पशक्तिमान होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है । धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता, दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नहीं करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण पक्षपात रहित न्याय करता है। अतः जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बनाकर संसार में कार्य करता और अपने जीवन को व्यतीत करता है वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषों से युक्त होकर पक्ष-पातरहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त संकुचित रखता है। यह केवल अपने में या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के-

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।। (यजु० ४०/६)

अनुसार अपने को सब प्राणियों में और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह सब वस्तुओं में व्याप्त हो जाय। उसके लिए एक यह ही प्रकार है कि वह अपने को 'सर्वप्रिय' 'सर्वहितकारी' बना सके, यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

सर्वहित-

जिस न्याय में किसी का अहित न हो, वह पक्षपात रहित न्याय है। इसका दूसरा नाम 'सर्वहित' है । ईश्वर इतना गम्भीर है कि दिन-रात सबका न्याय करता हुआ भी प्रत्येक जीव के हित को लक्ष्य से रख एक जीव के बुरे कर्मों को दूसरे पर प्रकट नहीं करता, चूँकि वह जानता है कि बुराई के छुड़ाने में ऐसी बात साधक नहीं होती, अपितु बाधक होती है। जो जीव धर्म का आचरण करना चाहे, उसको 'सर्वहितकारी' अवश्य होना चाहिए।। प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य एक दूसरे की निन्दा करने के लिए घर-घर मारे-मारे फिरते हैं और उनको तब तक चैन नहीं पड़ता, जब तक दस-बीस स्थानों पर किसी की निन्दा न कर आवें। परन्तु वे यह नहीं विचारते कि ऐसा करने से किसी का भी कोई हित नहीं होता, बल्कि अपनी ही आदत खराब होती है और परस्पर रागद्वेष की वृद्धि होकर वैमनस्य बढ़ता है।

स्वार्थी पुरुष भी पूर्ण न्याय या सर्वहित नहीं कर सकता। वह अन्यों के लाभ की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक मूल्यवान समझता है और दूसरे के बड़े-बड़े लाभ को अपने तुच्छ से तुच्छ लाभ पर कुर्बान कर देता है। बहुत से मतों के प्रवर्तकों ने अपने मान और प्रतिष्ठा के लिए अपनी न्यूनताओं (कमजोरियों) को भी अपने अनुयायियों का एक धार्मिक नियम बना दिया और कौम की आगे होने वाली उन्नति में एक जबर्दस्त रोड़ा अटकाया जिसके फलस्वरूप आज कुछ लोग 'शारदा एक्ट' जैसे आवश्यक और अत्युपयोगी कानून को भी अपने मजहब के विरुद्ध मानकर उसका विरोध करते और कहते हैं कि हमारे पूर्वज इस प्रकार की कम उम्र वाली कन्याओं से शादी कर गये हैं, अतः यह कानून उनके विरुद्ध होगा, इसलिए हम नहीं मान सकते। इसके विरुद्ध ऋषि लोग ईश्वरभाव से प्रेरित हो तथा सर्वहित को लक्ष्य में रखकर जो कुछ कार्य कर गये, वह उन दोषों से रहित था, जिनसे सामान्य पुरुष प्रायः शीघ्र मुक्त नहीं हो पाते।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित-

प्रत्यक्षादि प्रमाण जो आगे आयेंगे, उनकी व्याख्या वहां की जावेगी। यहां केवल यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी चीज के लिए परीक्षा द्वार बन्द नहीं। किसी भी काम को खूब सोच समझ और परीक्षा करके करना चाहिए। यदि हम उन परीक्षाओं में ठीक और यथार्थ उतरे तो धर्म; और यदि न उतरे तो उसे अधर्म (अकर्तव्य) समझना चाहिए। इसलिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का स्वयं उत्तरदाता हो, स्वयं परीक्षा करके ही प्रत्येक कार्य को करने की आज्ञा दी गई है। चाहे रेलवे का प्रबन्ध इन्जीनियरिंग के अधीन

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

हमें ऋत सत्य के प्रति आत्मसमर्पण करना चाहिए

❑पं० उम्मेद सिंह विशारद,
वैदिक प्रचारक
गढ़ निवास, मोहकमपुर देहरादून
मो० 9411512019

आत्मा जब परमात्मा के प्रति अपने को समर्पित कर देता है, जब कह उठता है- हे ईश्वर! यह मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा है- तब वह आत्मा ईश्वर के प्रेम में- उसी की गोद में जा पहुंचता है, तभी वह अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त होता है।

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु तदवक्तारमवतु। अवतु माम। अवतु वक्तारम्।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का लेखन उक्त तैतिरीय आरण्यक के वचन से प्रारम्भ किया है। इसका अर्थ यह है कि मैं जो बात जैसी होगी वैसी ही कहूँगा, बिल्कुल सत्य कहूँगा, परन्तु फिर भी ईश्वर मेरी रक्षा करे। जो बात जैसी है वैसे ही कोई कहेगा तो स्वयं सत्य उसकी रक्षा करेगा। फिर ईश्वर को बीच में लाने की क्या आवश्यकता है। इससे गूढ़ रहस्य छिपा है? असत्य बोलने वाला कहे- भगवान मेरी रक्षा करो, समझ आता है, किन्तु सत्य बोलने वाला क्यों कहे।

मानव जो देखता सुनता है वह उसके ज्ञानार्जन के आधार पर निर्णय करता है। वह उसके लिये तो सत्य हो सकता है, किन्तु क्या ईश्वरीय विधान में भी वह सत्य है? मनुष्य अपने सांसारिक ज्ञान पर केन्द्रित होकर कहेगा। किन्तु सत्य की परख विशाल सृष्टि के दृष्टिकोण से ही हो सकेगी।

इसलिए श्रुति ने कहा कि मैं अपने से सत्य कहता हूँ और यथार्थ कहता हूँ, किन्तु ईश्वर की दृष्टि में असत्य हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में मैं अपने को ईश्वर के प्रति समर्पण करता हूँ, क्योंकि मेरी दृष्टि मुझसे ही बंधी है और उसकी दृष्टि सबसे बंधी है।

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

ईश्वर 'ऋत सत्य' है, और भूत-भविष्य-वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता। वह काल की चपेट में नहीं आता है। अतः 'सत्य' शब्द मनुष्यों में ही सम्बन्ध रखता है, ईश्वर में नहीं और सत्य सदैव 'ऋत सत्य' की अपेक्षा असत्य ही होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर अवश्य होते हैं परन्तु ईश्वर रूपी 'ऋत सत्य' में संयोग व वियोग नहीं होता है। सदैव सयोग ही सयोग रहता है। अतः वास्तविक सत्य तो 'ऋत सत्य' है। असत्य के आश्रित असुर, सत्य के आश्रित मनुष्य और ऋत सत्य के आश्रित देवता रहते हैं।

आत्म समर्पण के लिये तीव्र इच्छा शक्ति

सर्वप्रथम सत्य की बांह पकड़ने के लिये तीव्र इच्छा शक्ति व पुरुषार्थ का होना अनिवार्य है। किन्तु यदि बुरा आदमी बुरे काम के फल से बचने की ईश्वर से प्रार्थना करे, तो ठीक है -किन्तु यहाँ तो कहा गया है कि भले ही मैंने सत्कर्म किया हो, किन्तु हो सकता है ईश्वर की दृष्टि में वह असत्य हो, तभी प्रार्थना की गयी कि मैं कर्म करके आपकी शरण में आता हूँ, आपको समर्पित होता हूँ। क्योंकि मैं कर्म करने में स्वतन्त्र हूँ और फल भोगने में परतंत्र हूँ, आपके अधीन हूँ।

तीव्र इच्छाशक्ति के उपाय

मनुष्य के अन्दर ऋत सत्य की ओर चलने की तीव्र इच्छाशक्ति होनी अनिवार्य है। उसे बढ़ाने के लिए कुछ उपाय करने होंगे। क्योंकि किसी वस्तु के गुणों को जानने से ही उसे प्राप्त करने की तीव्र कामना होती है। वे उपाय हैं- ईश्वरीय वाणी, वैदिक धर्म, संस्कार, संस्कृति, सभ्यता को अपनाना; नियमित-सन्ध्या, यज्ञ, आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय व वेद के विद्वानों के उपदेश सपरिवार श्रवण मनन करना। निःस्वार्थ भाव से अपने मिशन की सेवा करना; सत्य के प्रचार के लिये जिन महापुरुषों ने अपने जीवन बलिदान किये हैं, उनके जीवन चरित्र को पढ़कर प्रेरणा लेना और उनके सर्जन कार्य को आगे बढ़ाना। ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण करके ऋत सत्य के लिये अपने प्राणों तक को भी बलिदान करने के लिए तत्पर रहना।

यदि उक्त आत्म-समर्पण की क्रियात्मक भावनाएँ हमारे जीवन में आ जाएँ तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। सम्पूर्ण संसार के मनुष्य सत्य की ओर टकटकी लगाये हुये हैं किन्तु अपने-अपने मतों के पूर्वाग्रहों से अशक्त हो रहे है। केवल वेदोक्त ऋत=सत्य ही संसार को मार्ग दिखा सकता है।

आत्मसमर्पण करने वाला निश्चिन्त हो जाता है।

आत्म समर्पण जीवन का नियम व सिद्धान्त है। हर व्यक्ति एक दूसरे की अपेक्षा छोटा है, एक दूसरे का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए अपने पुरुषार्थ से कर्म करते रहें, और सत्य की डोर को न छोड़ें। पुनः अपना सारा बोझ ईश्वर के ऊपर छोड़ने से ईश्वर सारा बोझ ले लेते हैं। कवि ने ठीक कहा है।

जब दांत न थे दूध दियो, जब दूध दियो तब अन्न न देहैं।
जल में थल में पशु पक्षिन की जो सुध लेत सो तो काहू न लैहैं।।

आत्म समर्पण का केवल एक ही उपाय है कि कुछ भी हम करें, उसको ईश्वर की आज्ञा के प्रति समर्पित होकर करें। तब सारा कार्य करते हुए भी चिन्ता बीच से निकल जायेगी। प्रत्येक अन्धविश्वास, अन्ध श्रद्धा 'ऋत सत्य' से दूर ले जाती है।

आत्म समर्पण केवल आस्तिक ही कर सकता है।

ऋत-सत्य पथगामी, सत्यवादी, पुरुषार्थी व्यक्ति के आत्मा में सदैव उत्साह बना रहता है और उसकी इच्छा मजबूत रहती है। उसका ईश्वर पर अटूट विश्वास होता है और वह प्रत्येक कृत्य को ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण करके करता है। जिन महापुरुषों ने सत्य मार्ग पर चल कर संसार को सत्य राह दिखाई है उनका प्रत्येक कृत्य ईश्वर के प्रति आत्म समर्पण था।

मैं को मिटा देना ही आत्म समर्पण है।

जब तक मानव के अन्दर 'अहंकार' मैं हूँ का भाव बना रहता है, और प्रत्येक सफलता का श्रेय अपने को देता है, और अविद्या से ग्रस्त है, तब तक ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण की भावना का उदय नहीं होगा। हर अणु व प्रत्येक पानी की बूंद जब तक अपने मूल से अलग है तब तक उसका मूल्य कुछ नहीं है। जब अणु अपने को विशाल पृथ्वी का हिस्सा बनाता है और पानी की बूँद समुद्र में जा डूबती है, तभी वह विशाल पृथ्वी व समुद्र को हिस्सा बन जाते हैं। इसी प्रकार दिये की लौ जब तक दिये के साथ बनी रहती है तो वह छोटी सी बत्ती का प्रकाश कहलाती है किन्तु जब-वह सूर्य से मिल जाती है तो अखिल ब्रह्माण्ड को प्रकाश देने लगती है। इसी प्रकार आत्मा जब परमात्मा के प्रति अपने को समर्पित कर देता है, जब कह उठता है, हे ईश्वर यह मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा है- तब वह आत्मा ईश्वर के प्रेम में उसी की गोद में जा पहुंचता है, तभी वह अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त होता है।

प्रश्न- ईश्वर है-- इस बात का पता कैसे चल सकता है?

प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती का उत्तर

ईश्वर की सत्ता का ज्ञान तीन प्रमाणों से मिलता है।

१- जब मनुष्य किसी श्रेष्ठ कार्य को करता है, तो हृदय में हर्ष और उत्साह पैदा होता है तथा जब बुरा काम करता है, तो लज्जा शंका और भय उत्पन्न होते हैं। यह प्रेरणा अंतर्यामी ईश्वर की ओर से ही मिलती है। जो व्यक्ति इस प्रेरणा के अनुसार स्वतंत्रता पूर्वक आचरण करता है, यह बुराई से बचकर सन्मार्ग की ओर बढ़ता है और जो इस प्रेरणा की ओर ध्यान न देकर यथेच्छ बुराईयों को करता रहता है तो वह अवनति को पहुँच कर दुःख उठाता है।

यह प्रेरणा ईश्वर की ओर से होती है, अतः सब मनुष्यों को ईश्वर का आत्मप्रत्यक्ष होता है।

२- जब शुद्धान्तःकरण योगी समाधिस्थ होता है,तब वह अपने और ईश्वर के स्वरूप में स्थित होकर ईश्वर का साक्षात् करता है- यह योगज प्रत्यक्ष कहलाता है।

३-जैसे अनुमान प्रमाण द्वारा धूम और अग्नि की व्याप्ति जानकर धूम दर्शन से अग्नि का अनुमान करना होता है, वैसे ही सृष्टि में रचना आदि विशेष गुणों के ज्ञान द्वारा ईश्वर की सिद्धि अनुमान प्रमाण से होती है। यदि रचना आदि के विशेष गुणों के ज्ञान के साथ योगी संयम भी करता है, तो उसको इन गुणों के आधार गुणी का आत्मप्रत्यक्ष भी हो जाता है। यह बड़ी विलक्षण सिद्धि है।

४-जैसे घड़ी को देखकर हम घड़ी साज का अनुमान कर लेते हैं। ऐसे ही सृष्टि रूपी कार्य को देखकर इसके कर्त्ता ईश्वर का अनुमान भी हो जाता है।

५- शब्द प्रमाण वेद से ईश्वर की सत्ता की सिद्धि होती है जैसे 'स दाधार पृथिवीमुत् द्याम्' 'यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः' 'य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः' 'द्यावाभूमि जनयन्देव एकः' इत्यादि वेद वचनों से ईश्वर का सृष्टिकर्तृत्त्व सिद्ध होता है।

(पं० जगदेव सिंह सिद्धांती कृत वैदिक धर्म परिचय से)

स्वास्थ्य चर्चा

अम तोपम तुलसी

❒ आयुर्वेद शिरोमणि डॉ० मनोहरलाल अग्रावत

सहज सुलभ तुलसी के निरंतर प्रयोग से हमारे ऋषि-मुनियों ने यथार्थ ज्ञान के आधार पर यह अनुभव किया कि यह 'वनस्पति' एक नहीं अनेक छोटे बड़े रोगों में लाभ पहुंचाती है और इसके द्वारा आस-पास का वातावरण भी शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद रहता है। भारतीय चिकित्सा विज्ञान में सब से प्राचीन और मान्य ग्रंथ 'चरक संहिता' में तुलसी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है-सुरसा (तुलसी) हिचकी, खांसी, विषविकार, पसली के दर्द को मिटाने वाली है। इससे पित्त की वृद्धि और दूषित कफ तथा वायु का शमन होता है। यह दुर्गंध को भी दूर करती है।

'धनवन्तरि निघन्टु' में कहा गया है- तुलसी हलकी, उष्ण, रुक्ष, कफदोषों और कृमिदोषों को मिटाने वाली और अग्निदीपक होती है। दूसरे 'राज वल्लभ निघन्टु' में कहा है कि तुलसी पित्तकारक तथा वात, कृमि और दुर्गन्ध को मिटाने वाली है, पसली के दर्द, खांसी, श्वास, हिचकी में लाभ करती है। 'कैयदेव निघन्टु' में तुलसी के गुणों का इस प्रकार वर्णन किया गया है- तुलसी तीक्ष्ण, कटु, कफ, खांसी, हिचकी, उल्टी, कृमि, दुर्गन्ध, कोढ़, आंखों की बीमारी आदि में लाभकारी है। प्रसिद्ध ग्रंथ 'भावप्रकाश' में कहा गया है- तुलसी कटु, तिक्त, हृदय के लिए हितकर, त्वचा के रोगों में लाभदायक, पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली, मूत्र कृच्छ के कष्ट को मिटाने वाली तथा कफ, वात संबंधी विकारों को निश्चित रूप से ठीक करती है।

तुलसी मुख्यतः दो प्रकार की होती है- रामा (श्वेत) और श्यामा। (काली) आयुर्वेद की दृष्टि से श्वेत तुलसी की अपेक्षा श्यामा तुलसी में अधिक गुण पाये जाते हैं। यह गर्म, त्रिदोषनाशक, खांसी, शूल, कृमि, वमन तथा वात नाशक और आरोग्यवर्धक होती है। तुलसी की दूसरी जाति 'वनतुलसी' है जिसे कठेरक भी कहा जाता है। इसकी गंध घरेलू तुलसी की अपेक्षा बहुत तेज होती है और इसमें विष का प्रभाव नष्ट करने की क्षमता विशेष होती है। रक्तदोष, कोढ़, चक्षुरोग और प्रसव की चिकित्सा में यह विशेष उपयोगी होती है। तीसरी जाति को 'मरुवक' कहते हैं। कहीं कहीं इसे 'मरवा' कहते है। 'राजमार्तण्ड' ग्रंथ के मतानुसार हथियार से कट जाने या रगड़ लगकर घाव हो जाने पर इसका रस लाभकारी होता है। किसी विषैले जीव के डंक मार देने पर भी इसको लगाने से आराम होता है। चौथी जाति 'बर्बरी' या बुबई तुलसी होती है, जिसकी मंजरी की गंध अधिक तेज होती है।

तुलसी बीज, जिनको यूनानी तिब (हकीमी) चिकित्सा पद्धति में-'तुख्म रेहाँ' कहते हैं, बहुत अधिक बाजीकरण गुण युक्त माने गये है। वीर्य को गाढ़ा बनाने के लिए बीजों का प्रयोग किया जाता है।

तुलसी प्रकृति के अनुकूल औषधि है- यद्यपि इन ग्रंथो में तुलसी को तीक्ष्ण भी लिखा है पर उसकी तीक्ष्णता केवल विशेष प्रकार की और छोटे कृमियों को दूर करने तक ही सीमित है। जिस प्रकार वर्तमान समय की कीटाणुनाशक और दुर्गंध मिटाने वाली औषधियाँ कुछ भी अधिक हो जाने से हानिप्रद भी हो सकती हैं, वैसी बात तुलसी में नही है। यह घरेलू वनस्पति है जिसके प्रयोग से किसी प्रकार का खतरा नहीं रहता, इस दृष्टि से डॉक्टरी और वैद्यक औषधियों से भी श्रेष्ठ सिद्ध होती है।

सब प्रकार के ज्वर, खांसी और जुकाम, आंख, नाक और कानों के रोग, पुरुषों के वीर्य और मूत्र संबंधी रोग, स्त्रियों के विशेष रोग, बच्चों के रोग, उदर रोग, फोड़ा, घाव और चर्म रोग, मस्तिष्क और स्नायु संबंधी रोग, दांतों की पीड़ा, सिरदर्द, गठिया और जोड़ों का दर्द, सर्पदंश, एसीडिटी तथा कोलेस्ट्रोल को नियमित करने में चमत्कारिक लाभ पाया जाता है। किडनी विकृति और मूर्छा में भी तुलसी का उपचार बड़ा ही महत्वपूर्ण है। तुलसी की बगीची में बैठकर पढ़िये, लेटिये, खेलिये और व्यायाम कजिये, आपको दीर्घायु मिलेगी, सुख वैभव के लिए उत्साह मिलेगा, प्रदूषण से बचे रहेंगे। तुलसी कवच की तरह रक्षा करेगी। कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं।

(१) अजीर्ण- उचित यही है कि अजीर्ण होने पर एक दिन का उपवास ही करें और पानी पीते रहें ताकि अन्दर की पूरी तरह सफाई हो जाये। अजीर्ण होने पर आप तुलसी का प्रयोग किसी भी प्रकार कर सकते हैं। ताजा पत्ते तोड़िये और दस ग्राम रस निकाल कर पी जाईये। अजीर्ण के साथ पेट दर्द भी उठे तो तुलसी व अदरक का रस मिलाकर एक-एक चम्मच दो-दो घण्टे बाद तीन बार लें। यह रस हल्का तपाकर लेने से शीघ्र लाभ होता है।

(२) अफारा – सफेद तुलसी का रस थोड़ा गर्म करके पिलादें– तुरन्त आराम होगा।

(३) पित्त प्रकोप– अगर शरीर में पित्त प्रकोप हो और पाचन भी बिगड़ चुका हो तो ५ बादाम की गिरी, ५ तुलसीदल, २ छोटी इलायची और ४ काली मिर्च इन्हें धो–पीसकर दूध में मिलाएँ और मिश्री या चीनी घोलकर पिलाएं, दो दिन में शांति अनुभव होने लगेगी।

(४) हैजा– तुलसीदल (पत्ते) और काली मिर्च पीसकर छोटी गोलियां बनालें। ३–३ घण्टे बाद २–२ गोली पानी के घूंट के साथ निगल जाएँ। हैजे के प्रकोप से आप बचे रहेंगे। अकेला तुलसी का रस ही हैजे को शांत करने में पूरी तरह समर्थ है। आजमाकर देख लें। यह हैजे की प्यास और दिल की घबराहट दूर करने में १०० प्रतिशत खरा पाया गया है।

(५) हिचकी– तुलसी का रस १० ग्राम, शहद ५ ग्राम मिलकार चाट लें।

(६) सूजन – तुलसी दल का लेप सूजन को शांत कर देता है। दांत, डाढ़ के दर्द से गालों तक सूचन आ गई हो तो भी यही लेप करें।

(७) सूखी खांसी – तुलसी की मंजरी, सोंठ और प्याज समान मात्रा में पीसकर शहद में चांटे, इससे दमा तक ठीक हो जाता है। सूखी खांसी इस उपचार से खुद ही सूख जायेगी। खांसी सूखी भी हो और छाती भी घरघराने लगे तो तुलसी के बीज और मिश्री बराबर मात्रा में पीसकर ३–३ ग्राम फांक लें और पानी पीलें। चौबीस घण्टों में न खांसी रहेगी न खुश्की और न छाती घरघराएगी, न सीटियों जैसी आवाजें निकलेंगी।

(८) कम सुनाई देना– श्याम (काली) तुलसी का रस गुन–गुना करके तेल की तरह कानों में सुबह– शाम डालें। ८–१० दिन में कानों में साफ सुनाई देने लगेगा।

(९) सिर चकराना – वायु अथवा गर्मी के प्रकोप से खून जब पूरी वेग से सिर को दौड़ता है तो चक्कर से आते अनुभव होते हैं। ऐसे में तुलसी के रस में थोड़ी (चीनी) घोलकर पिलादें। तुरन्त आराम आ जायेगा।

(१०) सर्दी जुकाम– छोटी इलायची के कुल २ या ३ दाने और २ ग्राम तुलसी मंजरी (बौर) डालकर कर काढ़ा बनाएं और चाय की तरह दूध चीनी डालकर पिलादें। दिन में ४–५ बार भी पिला देंगे तो चाय की तरह खुश्की तो नहीं करेगी मगर सर्दी जुकाम को जड़ से ही खुश्क कर देगी।

(११) पेट दर्द– तुलसी पत्तों का रस व अदरक का रस २–२ चम्मच मिलाकर दिन में ३–४ बार पीने से पेट दर्द में लाभ होता है।

(१२) पेट के कीड़े– तुलसी के ११ पत्ते १ ग्राम बायबिडंग के साथ पीस कर सुबह शाम ताजा पानी के साथ लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

१३–दाद पर– तुलसी के पत्ते नींबू के रस में पीसकर दादपर लगाते रहें, दाद कुछ दिन में समाप्त हो जाता है।

१४–मस्तिष्क रोग– तुलसी के पत्ते और ब्राह्मी ५–५ ग्राम पीसकर पानी में छानकर एक गिलास प्रातः काल नित्य सेवन करने से मस्तिष्क की दुर्बलता से उत्पन्न उन्माद (पागलपन) ठीक होता है।

१५–स्मरण शक्ति के लिए – प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् तुलसी के ५ पत्ते जल के साथ निगल लेने से मस्तिष्क की दुर्बलता दूर होकर स्मरण शक्ति तथा मेधा की वृद्धि होती है।

१६–सिरदर्द– वन तुलसी का फूल (मंजरी) और काली मिर्चों को जलते कोयले पर डालकर उसका धुआं सूंघने से सिर का दर्द ठीक हो जाता है।

१७–विष खा लेने पर– किसी प्रकार के विष (जहर) जैसे अफीम, धतूरा, कुचला आदि खा जाने पर तुलसी के पत्तों को पीसकर गाय के घी में मिलाकर पिलाने से विष उतरता है। घी की मात्रा अवस्था के अनुसार ढाई सौ ग्राम से पांच सौ ग्राम तक हो सकती है। एक बार में आराम न मिलने पर बार–बार तुलसी घृत पिलाना चाहिए।

१८–संखिया (ARSENIC) जहर खा लेने पर पचास ग्राम शुद्ध गाय या भैंस के घी में पच्चीस तुलसी के पत्ते और देशी कपूर दो ग्राम पीसकर मिलादें और खा लेने वाले को पिलादें। अगर संखिया खाये देर नहीं हुई हो तो इस प्रयोग से प्राण बच जाते है। १५–१५ मिनट बाद यह क्रिया दोहराते रहें ताकि विष पूरी तरह मल मूत्र या वमन (उल्टी) के रास्ते निकल जाये।

१९–विषमज्वर और पुराने ज्वर में– तुलसी के पत्तों का रस दस ग्राम प्रातः पीते रहने से ज्वर समाप्त हो जाता है।

२०–मलेरिया ज्वर में– तुलसी के पत्ते और सूरजमुखी के पत्ते पीस छान कर पिलाने से लाभ होता है। सुबह शाम तुलसी पत्तों का काढ़ा– १५ पत्ते तुलसी के, ५ ग्राम अदरक, १० नग काली मिर्च; कूटकर २०० ग्राम पानी में उबालें। ५० ग्राम के लगभग पानी रहने पर थोड़ी शक्कर डालकर उतार लें। छान कर रोगी को पिलाएं। ज्वर समाप्त हो जायेगा। रोगी का पेट साफ रहना जरूरी है।

२१–घर की सफाई में– चारपाई (खाट) में खटमल हो जाने पर वन तुलसी की डाली रख देने से खटमल भाग जाते हैं। इस डाली को घर में रखने से मच्छर, छंछुदर तथा सांप नहीं आते ये सब जीव वन तुलसी की गन्ध को सहन नहीं कर सकते।

जानते हो!

❑आस्था

❖जिस तरह मनुष्यों की पहचान उनके फिंगर प्रिंट से की जाती है, उसी तरह कुत्ते की पहचान उसकी नाक के प्रिंट से की जाती है।

❖संसार का सबसे बड़ा पक्षी सारस है, इसकी १४-१५ प्रजातियों में से ६ भारत में पाई जाती हैं। सारस की लंबाई लगभग डेढ़ मीटर तक होती है।

❖फल्वरपेकर संसार का सबसे छोटा पक्षी है। इसकी लंबाई अधिकतम ६-७ इंच और वजन ४ से पांच ग्राम होता है।

❖सबसे तेज गति से उड़ने वाला पक्षी भूरे गले और लंबी पूंछ वाला स्विफ्ट है। यह पक्षी २५० से ३०० किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ सकता है।

❖सबसे धीमी गति से उड़ने वाला पक्षी कठफोड़वा (वुडकाक) है। यह मात्र ८ किलामीटर प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ता है।

❖जैकाना पक्षी का पंख चाकू की धार की तरह पैना होता है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रेषक : हर्षित आर्य इण्डस स्कूल, मिर्चपुर

❍सोनू- तुम्हें पोस्ट आफिस का पता है?
अनु- जी पता तो नहीं है, पर आप एड्रेस बता देंगे तो खोज लूंगा।

❍एक साईकिल सवार साईकिल से गिर गया। लोग उसे उठाने पहुँचे तो वह बोला- कृपया मुझे हाथ न लगाएँ।
एक ने कहा- भाई, तुम्हारी मदद करना तो हमारा धर्म है।
साईकिल सवार ने कहा-मदद की बात नहीं दरअसल यह मेरी साईकिल से उतरने की स्टाईल है।

❍कार ड्राईवर- ऐ बच्चे, रास्ते से हट जाओ, नहीं तो यह कार तुम्हारे ऊपर से गुजर जाएगी।
बच्चा- चलो, चलो, मेरे ऊपर से आज तक कितने ही हवाई जहाज गुजर गए और मेरा कुछ नहीं बिगड़ा।

❍टिकिट चेकर- एक यात्री से तुम्हारा टिकिट किधर है?
यात्री-'नहीं है'।
टिकिट चेकर- तुम्हें कहाँ जाना है?
यात्री- जहाँ भगवान राम पैदा हुए थे।
टिकिट चेकर-'माफ कीजिए, अब आपको वहाँ जाना होगा जहाँ भगवान कृष्ण पैदा हुए थे।'

❍एक व्यक्ति ने दुकान पर जाकर दुकानदार से पूछा-'क्या आपके पास चूहा मारने की दवा है?'
दुकानदार बोला-'है, क्या दवा आप ले जाएँगे?'
व्यक्ति ने उत्तर दिया-'नहीं मैं चूहे को ही लेने भेज दूँगा।

बाल वाटिका

प्रहेलिका:

☹हरी कोठी है भारी, उजली उजली धरती।
लाल लाल है बिस्तर पर काली मछली सोती।।

☹छोटी चिड़िया आती थी,
लाल किनारे पर सोती थी।
सोने जैसी चोंच थी,
पूंछ से पानी पीती थी।।

☹निरन्तर चलता रहता है वह,
नहीं किसी से डरता है वह,
कोई रोक नहीं पाता उसको,
जबकि धीरे चलता है वह।।

☹बोली में गुण बहुत हैं
पर मुझसे अच्छा कौन?
सारे झगड़ों को टाल दूँ-
बतलाओ मैं कौन?

☹आता है तो खिलते फूल, पक्षी गाते गाना,
सभी को जीवन देता है पर उसके पास न जाना।।

तरबूज, दीपक-बाती, समय, मौन, सूरज

विचार कणिका:

❑प्रतिभा

卐 न पढ़ने वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो पढ़ते हैं। पढ़ने वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो पढ़े हुए को स्मरण करते हैं। पढ़कर स्मरण करने वालों से वे श्रेष्ठ हैं, जो अभिप्राय: को समझते हैं तथा उनसे भी वे श्रेष्ठ हैं जो उसके अनुसार आचरण करते हैं।

卐 बड़े आदमी इसलिए बड़े नहीं होते कि वे महान हैं, बल्कि उनकी महानता इसमें है कि वे दूसरों को बड़ा बनाते हैं।

卐 गुण एकान्त में विकसित होता है, परन्तु चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है।

卐 खाया हुआ अन्न अपना नहीं होता है अपितु पचाया हुआ अपना होता है, इसी प्रकार कमाया हुआ धन अपना नहीं होता है, अपितु परोपकार में लगाया हुआ धन अपना होता है।

卐 मीठा लगने वाला सच बोलो, कड़वा लगने वाला नहीं, पर मीठा लगने वाला झूठ न बोले, यही धर्म है।

छोटी छाटी सीख ही महान बनाती हैं

❒सुमेधा आर्या

सोच का अन्तर

एक चींटी कहीं जा रही थी। रास्ते में उसे दूसरी चींटी मिल गई। दोनों ने एक दूसरे का हालचाल पूछा– पहली ने कहा और तो सब ठीक है, पर मेरा मुंह हमेशा खारा बना रहता है। दूसरी ने पूछा –रहती कहाँ हो? उसने बताया नमक के पहाड़ पर। 'तब तो मुंह खारा रहेगा ही। आओ मैं तुम्हें अपने चीनी के पहाड़ पर ले चलती हूँ।' चीनी के पहाड़ पर जाने के बाद भी पहली चींटी का मुंह खारा ही रहा। पहली ने कहा– अपना मुंह खोल कर दिखाओ। उसने देखा उसके मुंह में नमक का कण था। उसने कहा –जब तक मुंह में नमक रहेगा, कुछ भी करलो, मुंह तो खारा रहेगा ही। उसने मुंह से नमक निकाला तो उसका मुंह भी मीठा हो गया।

जब तक मनुष्य अपने पूर्वाग्रहों को नहीं छोड़ेगा उसे सत्य की प्राप्ति होगी भी कैसे? सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में तत्पर रहना कोई छोटी बात नहीं है। पर यही मनुष्य के कल्याण का उपाय है। सत्य को प्राप्त करने के लिए पहले हमें अपने अन्दर स्थित असत्य को छोड़ना पड़ेगा।

साथ रहने में ही शोभा है।

एक ऋषि के कई शिष्य थे। सभी प्रतिभावान थे। पर उनमें से एक दो के मन में अहंकार का भाव आ गया था और वे आपस में लड़ते रहते थे। गुरु एक बार शिष्यों के साथ आग ताप रहे थे। एक शिष्य को कहा– एक कोयला अंगीठी से बाहर निकाल दो। मैं उसी से तापूंगा। शिष्य ने चिमटे के साथ कोयला निकाल दिया। पर यह क्या! कोयला अंगीठी से बाहर आते ही काला हो गया। गुरु ने शिष्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा यह कोयला अंगीठी के अंदर चमक रहा था, पर बाहर आते ही काला हो गया। उसी तरह तुम्हारी क्षमता की चमक एकता रूपी अंगीठी के भीतर ही है। इससे अलग होते ही तुम्हारी चमक फीकी पड़ जाएगी।

प्रत्येक मनुष्य को समाज के ऐसे सभी नियमों का पालन करना चाहिए जो सबके भले के हों। मिलकर रहना और मिलकर चलना मानवता का एक उत्तम गुण है। मिलकर रहने से हमारी शक्तियों का विकास होता है।

धरोहर

एक व्यापारी के चार बेटे थे। वह बूढ़ा हो गया था। उसे हरदम यही चिन्ता खाए जाती थी कि उसके बाद घर की संभाल कौन करेगा। उसने चारों बेटों की परीक्षा करनी चाही। उसने अपने घर पर एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया और अपने चारों बेटों को एक एक मुट्ठी धान देकर कहा– इसको संभाल कर रखना और जब मैं मांगूं तब वापस लौटा देना। सबसे बड़े बेटे ने सोचा– पिताजी मजाक कर रहे हैं। उसने धान को ऐसे ही फैंक दिया। दूसरे ने सोचा– घर में बहुत धान रखा ही है, जब पिताजी मांगेंगे तो उसमें से एक मुट्ठी निकाल कर दे दूंगा। तीसरे ने उस एक मुट्ठी धान को अच्छी तरह से पोटली में बांधकर संदूक में रख दिया। सबसे छोटे बेटे ने उस एक मुट्ठी धान को मकान के पिछवाड़े में बो दिया। अच्छी वर्षा हुई। अच्छी फसल हुई। दूसरी, तीसरी, चौथी साल भी उसने धान बोया, इस प्रकार उसने कई घड़े धान इकट्ठा कर लिया। उस साल व्यापारी ने फिर एक यज्ञ का आयोजन किया। उसने अपने चारों बेटों से एक मुट्ठी धान मांगा। बड़े ने कह दिया कि मैंने तो सोचा था कि आप मजाक कर रहे हैं, इसलिए मैंने धान फैंक दिया। दूसरे ने घर में पड़ी धान में से एक मुट्ठी लाकर दे दिया। तीसरे ने संदूक में से निकाल कर वहीं पोटली पिता को सौंप दी। चौथे ने सारी बात बता कर कहा– पिताजी उस एक मुट्ठी धान से मेरे पास अनेक घड़े धान हो गई है। और उसने सारी धान मंगवाकर पिता के सामने रख दी। पिता ने प्रसन्न होकर उस बेटे को व्यापार की सारी जिम्मेदारी सौंप दी और खुद वानप्रस्थ हो गए।

वेद में आता है– बुद्धिमान पूर्वजों की बनाई हुई श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करो। हम अपने पूर्वजों से प्राप्त श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करके, उनके दिये ज्ञान का विस्तार करके ही उनके ऋण से उऋण हो सकते हैं।

तिनका–तिनका नीड़ बनाती

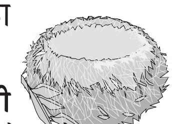

–माधुरी शास्त्री

ये देखो चिड़िया के बच्चे,
कितने प्यारे कितने कच्चे।
पंखों में भी जान नहीं है,
दुश्मन की पहचान नहीं है।
गिर जाएँ तो उठ न पाते,
दाना खुद ही चुग ना पाते।
तिनकातिनका नीड़ बनाती,
माँ उन बच्चों को दुलराती।
बचपन में वे रहते निर्भर,
खापीकर उड़ जाते फुर फुर।
फिर ना माँ की याद सताती,
ना चूं चूं कर चोंच बुलाती।
ना आँखें आंसू बरसाती,
माँ बैठी तकती रह जाती।

नववर्ष का गीत

❑रामरख आर्य भजनोपदेशक
गुजरानी, जिला भिवानी

सन को छोड़ो, संवत् पकड़ो जो सब का आधार,
आज क्यों भूल गये।

नए साल में नई मुबारक देते हैं सारे भाई।
अंग्रेजी के नए साल में नई चीज कुछ ना पाई।
हैप्पी कार्ड बांट रहे हैं भारत के नरनार ।।१।।

गिनती में भी गड़बड़ है नौ को ग्यारह कहते हैं।
दस से बना दिसम्बर उसको क्यों ये बारह कहते हैं।
इतनी गलती होने पर भी क्यों हम करते प्यार।।२।।

सात से बना सितम्बर उसको नौवां मास बताते हैं।
आठ से अक्तूबर बनता दसवां कह गलती खाते हैं।
आंख मींच कर मान रही है भारत की सरकार।।३।।

सुनो खासियत संवत् की ना कोई गलती भूल मिले।
नय साल के तिथि महीने मौसम के अनुकूल मिले।
फसल पकी जब चैत मास में खुश होगे जमींदार।।४।।

तिथि के ऊपर चन्द्रमा घटता बढ़ता चलता है।
पूर्णिमा को सागर भी उछल किनारे मिलता है।
तारीख से ना लेना देना देखो करो विचार।।५।।

ऋतु बदलती मौसम आते कैसी अदा निराली है।
चैत मास जब आता है चहुं ओर हरियाली है।
पेड़ और पौधै मस्त हुए जब आई नई बहार।।६।।

नई उमंग और नई खुशी से झूम रहे सब नरनारी।
खून बदलता चैत मास में मान रही दुनिया सारी।
बूढ़ी औरत मस्त हुई जब फागुन हुआ सवार।।७।।

कर्जा लेना देना है जितने बही और खाते हैं।
आज उतारे जाते हैं खाते बदले जाते हैं।
सारा काम चले तिथियों से नकदी और उधार।।८।।

भारत वालो भारतीय संवत् को तुम अपनाओ।
रामरख कहता गैरों के क्यों पीछे पीछे जाओ।
तिथियों में है सोम और मंगल बृहस्पत शुक्रवार।।९।।

रामरख आर्य भजनोपदेशक
ग्रा० पत्रा० गुजरानी, जिला भिवानी

ज्ञान के पर्दे

भजन

–**श्रीपाल आर्योपदेशक**, वैदिक मिशनरी,
खेड़ा हटाना, जनपद बागपत

इसी बीर से रांडा अच्छा जो नित घर घर डोले।
बालम के संग लड़े रात दिन, गैर से हंस हंस बोले।।

वह विप्र ना किसी काम का जो ना नाम वेद का जाने।
उस माणस को कुण समझादे जो बस उल्टी ठाने।।
क्षत्रापन इसको ना कहते बिन मतलब हठ जो ठाने।
ठाली बैठ के तास बजावे अपने और बेगाने।
वैश्य कहलाने लायक ना जो भाव से कमती तोले।।१।।

ऐसा पूत जन्मते ही मरज्या जो बड़ों कै बट्टा लाता।
पिता का दर्जा नहीं जानता जो साहमी हाथ उठाता।।
पिता, पिता भी नहीं सुनो जो ना सन्तान पढ़ाता।
सर पर कर्जा करके मरज्या सब जग बुरा बताता।।
घरबारी, घरबारी कोन्या जो प्याज के छिलके छोले।।२।।

सरपंच और प्रधान मरो जो ना सही न्याय चुकावे।
मित्र रिश्तेदार सुनो मौके पर देखा जावे।।
ब्रह्मचारी योगीजन कोन्या रागरंग जिसे भावे।
वह सोना, सोना मत जानो जो अपना रंग छुपावे।
उसे कौन सज्जन ठहरादे जो अमृत में विष घोले।।३।।

तज करके घरबार कुटुम्ब अपने को आप बनाया।
डोरी गंडे ना बालक बांटे ना बीरां को बहकाया।
संयम सदाचार पालन कर जीवन को चमकाया।
महाभारत के बाद इसा बस सिर्फ दयानन्द आया।।
'श्रीपाल' जिसकी कृपा से ज्ञान के पर्दे खोले।।४।।

श्रीपाल जी आर्यसमाज के अनुभवी भजनोपदेशक, तपस्वी प्रचारक पूज्य स्वामी भीष्म जी के शिष्य हैं। आपकी प्रचार शैली बड़ी रोचक और प्रभावशाली है। स्वाध्यायशील और सिद्धांतवादी हैं। दक्षिणा आदि के संबंध में भी बड़े संतोषी और लालचरहित हैं। ८० वर्ष की अवस्था में भी वैदिक धर्म के लिए युवाओं जैसा जोश रखते हैं। हम आपके शतायु तक स्वस्थ रहने की कामना करते हैं।

आचार्य ब्र० नन्दकिशोर आर्य : एक भावपूर्ण श्रद्धांजली

❒आनंदप्रकाश आर्य जौरासी (समालखा) पानीपत 92157 00710

जो आता है वह जाता ही है
कभी न कभी जमाने से।
हाँ आर्यसमाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

विद्यावाचस्पति मनस्वी
कर एम ए पास इम्तिहान गया।
नारद की तरह भ्रमण करता
जो जबरदस्त इंसान गया।
स्वाध्याय शील विचारक चिंतक
वह अनुपम विद्वान गया।
जीवन यात्रा कर पूरी वह
आर्य समाज का हनुमान गया।
ऐसी निद्रा में जा सोया
अब जगेगा नहीं जगाने से।।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

ऋषि दयानंद का चेला बन
पाखंड से किया किनारा था।
आर्यसमाज के इतिहास लेखक को
पूर्ण सहयोग तुम्हारा था।
सत्यकेतु जी को ला ला दी सामग्री
न थका कभी ना हारा था।
अनीता आर्ष प्रकाशन को दी प्रेरणा
जिसको मन में धारा था।
घूड़मल प्रकाशन में प्रसिद्ध हो गए
आर्ष पुस्तकें छपवाने से।।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

कितनी ही संस्थाओं में योगदान
था नहीं बैठते थे खाली।
कोई समाज ऐसा ना होगा
जहां आपने हाजिरी ना डाली।
नेपाल में गुरुकुल खोल दिया
वेद उपनिषद की छा गई लाली।
मराठी नेपाली साहित्य छपवा फिर
गौरव ग्रंथ माला लिख डाली।
जो धुन लग गई उसमें रम गया
फिर हटा ही नहीं हटाने से।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

ऋषि ऋण उतारते रहे हमेशा
फिर बीमारी ने आ सताया था।
पटना से आए तो स्वामी
ऋतस्पति ने इंदौर दिखाया था।
आर्यसमाज और बंधुओं से भी
काफी सहयोग दिलाया था।
ठीक हुए तो गुरुकुल होशंगाबाद
में आराम के लिए बुलाया था।
स्वास्थ्य सुधार लगा था होने
यहां परहेज से पीने खाने से।।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

ऋतस्पति जी व सत्यसिंधु
सेवा में कसर न उठाई ना।
ब्रह्मचारियों ने की सेवा इतनी
कोई करे बहन और भाई ना।
पर शास्त्र कहते नियम ईश्वर का
मृत्यु की कोई दवाई ना।
१७ फरवरी सोमवार चले गए
कोई अगली तारीख आई ना।।
सब रह गए हाथों को मलते
मृत्यु टलती नहीं टलाने से।।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

१८ को गुरुकुल के अंदर रख
मुख दर्शन के लिए खोला।
अंतिम दर्शन कर आर्यों ने
मुख से ओम् ओम् बोला।
'आनंद' अभागा नहीं जा पाया
दिल में तो उठता रहा शोला।
उन्नीस को वहीं तैयार चिता
पर रख दिया नाशवान चोला।
रहेंगे सदा स्मृतियों में हमारी,
भूलेंगे नहीं भुलाने से।।
हां आर्य समाज को क्षति हुई है
श्रीनंदकिशोर के जाने से।।

शांतिधर्मी परिसर नरवाना मार्ग जींद में

नवसस्येष्टि (होली)महोत्सव

9 मार्च, 2020 सोमवार सायं 3-30 बजे

❖यज्ञ ❖भजन ❖प्रवचन

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

वैदिक प्रचार समिति

सम्पर्क : 9996338552, 9896412152, 9255268315

महाशय फूलसिंह आर्य का देहान्त : एक अपूरणीय क्षति

❒**अमित कुमार**, सिवाहा, जिला जींद (9728509096)

गत ५० से अधिक वर्षों तक निस्वार्थ भाव से वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले सरल व्यक्तित्त्व के धनी महाशय फूलसिंह जी आर्य (गोरछी जिला हिसार) का गत २१ फरवरी को ८८ वर्ष की आयु में हृदय गति रूकने से देहान्त हो गया। उनका निधन सम्पूर्ण समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। महाशय फूल सिंह आर्य जी का जन्म हिसार जिले के गोरछी गांव में सन् १९३२ ई० में हुआ। इनके पिता जी ठंडुराम व माता जी बसंती देवी धर्म परायण गृहस्थी थे। महाशय जी दो भाई थे। इनसे बड़े अमीलाल जी थे। शिक्षा न के बराबर ग्रहण कर पाए। बचपन साथियों के साथ खेलकूद में बीता। पिता जी के साथ कृषि कार्य में हाथ बंटाते थे। गाने का शौक बचपन से लग गया। साथियों के साथ गाना बजाना इत्यादि करने लग गए। युवावस्था में भी महाशय जी हम उम्र साथियों के साथ इधर उधर कहीं जाते तो अपनी सुमधुर वाणी से भजन सुनाकर आर्नंदित कर देते। गुरुकुल धीरणवास के कुलपति स्वामी सर्वदानंद सरस्वती जी से प्रभावित होकर महाशय जी का आर्यसमाज में प्रवेश हुआ। शुरुआत में महाशयजी ने जांडवाला, बालसमंद, धीरणवास, मुकलान, आर्य नगर, गोरछी, नागौरी गेट हिसार आदि में आर्यसमाज का प्रचार किया। महाशय जी की प्रचार शैली से प्रभावित श्रोतागण इनको बाहर के कार्यक्रमों में भी बुलाने लग गए। महाशय जी पुश्तैनी कार्य के साथ-साथ आर्य समाज के जलसो में उत्सुकता दिखाते थे। महाशय जी के गुरु पंडित मनीराम जी भिवानी से थे।

हिसार जिले के गांव बालसमंद में पौराणिक साधु कृष्णानंद जी से आचार अनाचार विषय पर शास्त्रार्थ हो गया। कृष्णानंद महर्षि दयानंद सरस्वती पर आक्षेप कर रहा था। महाशय जी ने अनेक प्रमाण देकर उनको निरुत्तर कर दिया और अंततः वैद्य मंगल देव आर्य का प्रसिद्ध भजन 'काशी के म्हं रुक्का पड़ ग्या' को सुनकर कृष्णानंद जी शास्त्रार्थ में हार स्वीकार कर चले गए। महाशय फूलसिंह जी ने आर्यजगत् के अधिकांश कवियों के भजनों का भी प्रचार किया तथा अनेक पुराने भजनीकों के सम्पर्क में भी रहे। ८८ वर्ष की आयु तक भी महाशय जी आर्य समाज के उत्सवों व जलसों में प्रचार करते रहे।

महाशय जी सरल धार्मिक प्रवृत्ति के, राग द्वेष से ऊपर उठे हुए व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनका सादगीपूर्ण जीवन और सत्य आचरण लोगों को सहज ही प्रभावित कर देता था। मेरा सौभाग्य रहा कि मैं उनके देहान्त से कुछ समय पूर्व उनके दर्शन कर पाया और मैंने उनकी आवाज में स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य जी की रचनाओं- 'गांधी नै कहैं लई आजादी' और 'जिन्दे और मुरदे की आपको बतलादूँ पहचान' व अन्य कुछ भजनों की रिकार्डिंग भी कर ली। ऐस त्यागी प्रचारक को शत शत नमन।

Want eligible bride

Name: Mohit Verma, Birth Date: 17-02-1984, Birth Place : Peera Garhi, Delhi, Height: 5.7" Gotra: Self-Kitodio, Mother- Khangaras,Education: Graduate "Store Management Course : Life Saving Technician Profession: LST in Merchant Navy, Family Details: Father Name: Subhash Chand Verma, Mother Name: Urmila Verma, Father : Retired from Govt Job. Sisters : 2 Married (Chandigarh)"Brother : 1 Married

Contect : **Mr. Suresh Verma 9466676907**

स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ सत्संग

झज्जर, स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस का दो दिवसीय कार्यक्रम गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। पं० जयभगवान आर्य के संयोजन में रामभगत खुडन, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, तारिक शर्मा, पहलवान प्रेम देव, देवी सिंह आर्य, कुमारी प्राची आर्या, प्रदीप शास्त्री, संजय यादव, जिले सिंह, पं० रामकरण, आचार्य बालेश्वर, प्रा० द्वारका दास, आचार्य योगेन्द्र, डॉ० श्रीनिवास पूर्व कॉलेज प्राचार्य, डॉ० एच०एस० यादव पूर्व प्राचार्य, चन्द्रपाल माजरा, आचार्य वीरसैन, दलीप आर्य, महावीर सिंह, विजय आर्य, भजनोपेदशक धनीराम बेधड़क, नवीन आर्य, ओमप्रकाश यादव, भूराजप्रिय आदि गणमान्य महानुभावों ने प्रेरणा दायक बातें रखी। कुनाल आर्य यजमान तथा ब्र० सुभाष आर्य यज्ञ ब्रह्मा रहे। श्रीमती सरोज आर्य एवं श्री रमेश योगाचार्य की टीम ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी तथा योग संबंधित ज्ञान का परिचय दिया। स्वामी शक्तिवेश जी की संन्यास से पूर्व कृष्णदत्त शर्मा के रूप में गांव माछरौली के सरकारी स्कूल में आदर्श अध्यापक की भूमिका को कृतज्ञता से याद किया गया। ब्र० सत्यकाम जी एवं श्री ओमप्रकाश रोहतक ने समाज में बढ़ती हुई अनैतिकता पर दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि समय रहते इन बुराईयों पर हमने रोक नहीं लगाई तो इसके भंयकर दुष्परिणाम होंगे। ब्र० सुभाष आर्य ने स्वाहा को यज्ञ का सार तथा इदन्न मम को यज्ञ की आत्मा बताते हुए नि:स्वार्थ भावना से परोपकार करने की बात कही। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बताया कि स्वामी शक्तिवेश जी ने राष्ट्रीय सन्त के रूप में अपनी भूमिका निभाई। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल धासेड़ा, वैदिक आश्रम रेवाड़ी आदि संस्थाओं का सफल संचालन किया। उनके महान कार्यों से हमें संगठन को मजबूत करने की प्रेरणा मिलती है।

–सुभाष आर्य, मो० 9813356991

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

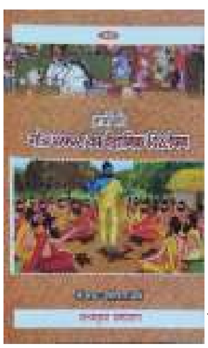

आर्यों की
गोत्र परम्परा का वैज्ञानिक
विश्लेषण

लेखक : महीपाल आर्य

पृष्ठ : ४८

मूल्य २० /– लागत मात्र

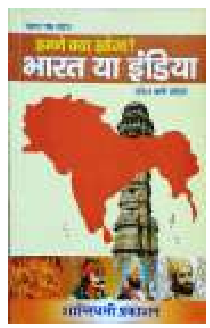

भारत एक खोज
हमने क्या खोजा?
भारत या इण्डिया

लेखक :
राजेशार्य आट्टा

पृष्ठ : ९०

मूल्य ४० /– लागत मात्र

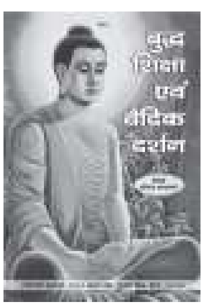

बुद्ध शिक्षा एवं वैदिक धर्म

लेखक : हरिवंश वानप्रस्थी

पृष्ठ : ८८

मूल्य लागत मात्र २०/–

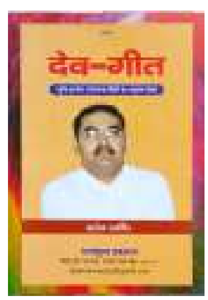

देव गीत

(स्तुति, प्रार्थना और प्रेरणा गीतों का अनुपम संग्रह)

लेखक : सहदेव समर्पित
पृष्ठ : ५०
मूल्य २०/– लागत मात्र

चारों पुस्तकों का मूल्य एक सौ रुपये अग्रिम भेजकर पंजीकृत डाक से मंगावें।
रजिस्टरी शुल्क हम वहन करेंगे।
पुस्तक मंगाने व अग्रिम राशि जमा कराने के लिये खाता नं० हेतु सम्पर्क करें– व्हाट्स एप– 9996338552
या पत्र व्यवहार करें– **:** शांतिधर्मी कार्यालय, पोस्ट बॉक्स नं० 19, मुख्य डाकघर जींद–126102

जाईट कान्वेंट स्कूल ने मनाया अपना दूसरा वार्षिक कला उत्सव

शिक्षा के माध्यम से कुरीतियों को दूर करें : जयवीर सिंह ढोडा

जींद, जाईट कान्वेंट स्कूल के वार्षिक कला उत्सव में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों के प्रति जागरूकता तथा विभिन्न रसों से ओतप्रोत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि की भूमिका श्री जयवीर सिंह ढांडा सह निर्देशक सेकेंडरी एजुकेशन हरियाणा ने निभाई तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अनिल सेहरावत रजिस्ट्रार हायर एजुकेशन हरियाणा, श्री सुशील जैन जी खंड शिक्षा अधिकारी जींद तथा श्री शिव नारायण शर्मा खंड शिक्षा अधिकारी जुलाना पहुंचे। विद्यालय के डायरेक्टर श्री नरेंद्र नाथ शर्मा जी ने आए हुए सभी अतिथियों व अभिभावकों का स्वागत किया और धन्यवाद किया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नर्सरी एलकेजी कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम रहे। विद्यार्थियों ने सर्जिकल स्ट्राइक, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कन्या शिक्षा, अनेकता में एकता, योग तथा विभिन्न त्योहारों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। प्राचार्य श्री आशुतोष शर्मा ने विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों तथा उपलब्धियों को साझा किया और भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम को विशेष रूप से सराहा और कहा कि हमें शिक्षा के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए जिसमें सबसे मुख्य जाति प्रथा है, इससे हमारे राष्ट्र का विकास बाधित हो रहा है। उन्होंने इस शानदार कार्यक्रम के लिए जाईट परिवार की प्रशंसा की और इसका सारा श्रेय डायरेक्टर श्री नरेंद्रनाथ शर्मा जी व चेयरमैन श्री अनिल बंसल जी के मार्गदर्शन तथा प्राचार्य श्री आशुतोष शर्मा के नेतृत्व व कर्मठ अध्यापकगण के परिश्रम तथा अभिभावकों व बच्चों के सहयोग को दिया।

मदिरापान (पृष्ठ १८ का शेष)

आज मंगलवार है इसलिए मैं शराब नहीं पीऊंगा। इसी प्रकार कुछ प्रौढ़ व्यक्ति भी नवरात्रि के दिनों में यह कहते हुए सुने जाते हैं कि नवरात्रि में मैं शराब नहीं पीऊंगा। इसका अर्थ स्पष्ट है कि शराब कोई अच्छी चीज नहीं है और देवी-देवताओं के पूजन में उसको अपवित्र मानकर ही लोग इसका त्याग करते हैं। फिर कई लोग भ्रमित होकर यह भी कहते हैं-हम तो पूर्ण शाकाहारी हैं, लेकिन शराब पीना तो मांसाहार नहीं है।

मैंने इन्टरनेट पर डब्ल्यू. डब्ल्यू.डब्ल्यू. विगन सोसायटी का एक पोर्टल देखा जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि अधिकांश शराबों में खून, हड्डी, चर्बी और कई प्रकार के जानवरों और कीड़ों के हिस्सों का मिश्रण होता है। इसी प्रकार कुछ किस्मों की शराबों में मछली का तेल और जिलेटिन तथा इजिंगिलास मिलाये जाते हैं। इजिंगिलास एक प्रकार का वह जिलेटिन पदार्थ है जो स्वच्छ पानी की मछलियों और विशेषकर स्टरजन मछलियों के ब्लेडर से निकालकर प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार, जानवरों की कोशिकाओं और चमड़ी और उनके अन्य शरीर के हिस्सों को उबालकर एक जेली का निर्माण होता है जिसे जिलेटिन कहते हैं। जब यह पदार्थ अधिकांश शराबों में मिलाये जाते हैं तो शराब मांसाहार ही हो जाती है। इसलिए भी कम से कम शाकाहारियों को तो अपने आध्यात्मिक, नैतिक और शारीरिक उत्थान और उन्नति के लिए चाहिए कि स्वयं भी शराब के नशे से बचें और इस नशे से होने वाले हानिकारक परिणामों से अपनी नई पीढ़ी को भी अवगत कराएं। बेहतर इंसान बनने के लिए यह आवश्यक है कि हम शराब न पीयें जैसा कि एक प्रसिद्ध मुस्लिम लेखक शरफराज मंजूर ने हिन्दुस्तान टाइम्स के २४-१२-२००४ के अग्रणी लेख में लिखा है कि ''मैं कभी भी शराब नहीं पीता और जब तक शराब नहीं पीता तब तक मेरे लिए एक अच्छे इंसान और उससे भी अधिक सच्चे मुस्लिम बने रहने का दरवाजा सर्वदा खुला है।'' शराब पीने का अर्थ मेरे लिये यह होगा कि वह अच्छा दरवाजा बंद हो गया।

इसलिए आज मद्यपान को छोड़ने के लिए केवल एक विशेष आवश्यकता है, और वह है ''दृढ़ संकल्प''। केवल एक बार दृढ़ संकल्प कर लिया और इसके परिणामों से अवगत हो गए तो यह नशा छूट सकता है। ऐसी आदत से ग्रस्त जो व्यक्ति पाए जाते हैं उनकी सामाजिक भर्त्सना होनी चाहिए और समाज के किसी भी पद पर ऐसे व्यक्तियों को स्थान नहीं मिलना चाहिए। तब हम उन व्यक्तियों के प्रति भी न्याय करेंगे और समाज के प्रति तथा अपने प्रति भी न्याय कर सकेंगे।

-लखोटिया निवास, एस-228, ग्रेटर कैलाश, भाग-2, नई दिल्ली-110048

चरित्र-निर्माण (पृष्ठ १२ का शेष)

का कारण न समझें। दुःख-सुख- क्रोध का कारण हम स्वयं ही होते हैं। हम यह जान लेवें कि क्रोध करने से धर्म ही नष्ट हो जाता है। हमारे क्रोध में अदृश्य विष छुपा होता है। यही अवस्था प्रशंसा तथा आलोचना से प्राप्त होती है। प्रशंसा से व्यक्ति अहंकारी बन जाता है। यह व्यक्ति को उसके स्तर से गिरा देती है। केवल धीर व्यक्ति इसके प्रभाव से बच सकता है। यह मैं मानता हूँ कि प्रशंसा अच्छे काम के लिए प्रेरित भी करती है लेकिन यह बात केवल ध ीर-गंभीर व्यक्ति पर लागू होती है, मूर्ख पर नहीं। जैसे कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि दूसरों के बच्चों को शराब आदि का नशा कराके, उन्हे नशे का आदी बनाकर बर्बाद करने का तरीका अपनाते हैं, ठीक वैसे ही कुछ लोग हमारी अधिक प्रशंसा करते हैं- उसको भी एक जहर ही माना जाता है। आलोचना भी कई बार व्यक्ति को उत्तेजित कर देती है और इसे सुनकर व्यक्ति परेशान होकर पथ-भ्रष्ट हो जाता है। केवल धीर व्यक्ति ही उक्त अवस्थाओं में अपने आप को सहज बनाए रख सकता है। वह इनके जहर से प्रभावित नहीं होता। अतः हम दिल और दिमाग दोनों पर जीत हासिल करके क्रोध, प्रशंसा-आलोचना की विष बेल से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। इन तीनों के प्रभाव से रहित व्यक्ति में ही प्रेम दिखाई देता है। उसके हाथ सदा दूसरों की मदद के लिए बढ़ते हैं। उसके कदम दूसरों की पीड़ा को कम करने लिए उठते हैं। उसके कान दूसरों के दर्द को सुनकर, समझ कर फैसला करवाते हैं। उनकी आंखों में दूसरों का दर्द झलकता है। सहनशील व्यक्ति में यही प्यार देखने को मिलता है। इसी प्यार में व्यक्ति की खूबसूरती छुपी रहती है। क्योंकि प्यार को ही सुन्दरता की आत्मा कहा जाता है। विनम्रता एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को देवता का रूप देता है और घमण्ड राक्षस बना देता है।

धर्म और अधर्म (पृष्ठ २१ का शेष)

रखा गया है और आदमी दिन रात लाइन और पुलों की देखभाल करते रहते हैं, पर फिर भी ड्राइवर को सर्च लाइट और अपनी आंखों से देखकर चलाने की आज्ञा दी जाती है ताकि उसका वैयक्तिक उत्तरदायित्व उसके कार्य के साथ रहे।

वेदोक्त- वेद जो कि 'विद् सत्तायाम, विद् ज्ञाने, विद् विचारणे तथा विदलृ लाभे' इन धातुओं से सिद्ध होता है, जिनका अर्थ हुआ कि जो सत्ता ज्ञान, विचार और लाभ के सहित हो अर्थात् सर्वप्रथम वेद द्वारा हमें प्रत्येक वस्तु की

अतः प्रत्येक समझदार मनुष्य को इस प्रकार मजहबों या मत-मतान्तरों को दूर से ही प्रणाम करके छोड़ देना चाहिए जिससे कि उसका जीवन व्यर्थ बर्बाद न हो।

तकनीक से आजादी (पृष्ठ १६ का शेष)

अधिकारी की उपस्थिति में भी उसको चुनौती देते हुए (दिखेंगे) कि हम ऐसी मीटिंगों और ऐसे कर्मचारियों/अधिकारियों की कोई परवाह नहीं करते। कोई हमारा क्या उखाड़ लेगा? अरे भाई दुनिया! शालीनता, शिष्टाचार और हया की सीमाओं के कारण चलती है, कानून से नहीं। कानून का काम तो अपराधी को दण्डित करना है और दण्ड देना एक नकारात्मक अवधारणा है। दुनिया को सुंदर बनाने के लिए तकनीकी का प्रयोग किया जा सकता है किंतु हमें विश्लेषण यह करना है कि हम तकनीक के गुलाम तो नहीं हो गए हैं?

तकनीक से आजादी शीर्षक से लेखक का मतलब तकनीक को छोड़ देने से नहीं है। तकनीक से आजादी का मतलब यह है कि हम तकनीक का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार करें किंतु उसकी लत में न फंस जायें। उसके गुलाम न हो जायें। अब समझने वाली बात यह है कि प्रत्येक तकनीक का आविष्कार या अनुसंधान क्या कहा जाये? मुझे नहीं मालूम किंतु जो भी हो, मानव ने मानव के लिए किया है। यदि तकनीक मानव को गुलाम बनाने लगे और हम आसानी से उसकी गुलामी स्वीकार भी कर लें तो दुनिया की सुंदरता ही समाप्त हो जाएगी ना।

अतः आओ हम सब तकनीक से आजादी हासिल करने का संकल्प करें। हम आजाद थे, और फिर से आजादी हासिल करके रहेंगे। हम मोबाइल/लेपटॉप/टीवी का प्रयोग अपने लिए और अपने लोगों की सुविधा के लिए करेंगे। हम किसी भी स्थिति में इनके गुलाम नहीं बनेंगे और जो गुलाम बन चुके हैं, उनका आह्वान करेंगे कि वे तकनीक से आजादी के लिए संघर्ष करें, हम उनके साथ हैं। उन्हें समझायेंगे कि उनका समय उनके लिए है, उनके परिवार के लिए है, संबन्धियों के लिए है, तकनीकी की गुलामी के लिए नहीं। हम तकनीकी उपकरणों को अपने समय को बर्बादी का कारण नहीं बनने देंगे। तकनीक को हमें नियंत्रण में रखना है, तकनीक का नियंत्रण हम कभी स्वीकार नहीं करेंगे। आखिर आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तकनीकी की गुलामी से मुक्ति के लिए आओ हम मिलकर नारा लगाएं-

गुलामों तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं।
तकनीकी मुर्दाबाद। मानवता जिंदाबाद।।

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❑ **भलेराम आर्य,** सांघी वाले 9416972879

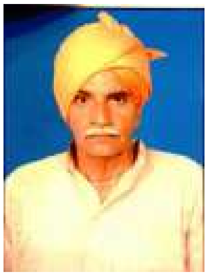

आलसी व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता, निन्द्रालु व्यक्ति विद्या का अभ्यासी नहीं हो सकता। ममत्व रखने वाला वैराग्यवान नहीं हो सकता और हिंसक स्वभाव वाला व्यक्ति दयालु नहीं हो सकता।

पाश्चात्य संस्कृति का कहना है कि खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ। रहो होटल में और मरो होस्पिटल में। जबकि भारतीय संस्कृति का उद्घोष रहा है-जीओ और जीने दो।

पाश्चात्य संस्कृति व्यक्ति को शव बनाती है और भारतीय संस्कृति व्यक्ति को शिव बनाती है।

आज हमारी ईमानदरी की स्थिति दयनीय है। अब हमें भ्रष्टाचार के भूत से और चरित्रहीनता की चुड़ैल से डर नहीं लगता।

केवल दिमाग की नस फटने या दिल की धड़कन रुक जाने से आदमी नहीं मरता बल्कि आदमी उस समय मरता है जब उसका विश्वास मर जाता है। उसके सपने मर जाते हैं।

सत्य व्रत का आचरण करने वाला मनुष्य यशस्वी होने के कारण देव होता है और उससे उलटे कर्म करने वाला असुर होता है।

प्रकृति एक पाठशाला है और उसके सान्निध्य में जीवन निखरता है।

जैसे आग में तपाए हुए लोहे के पिण्ड को घड़े में डाल देने से घड़े का पानी भी तप जाता है, उसी प्रकार मन के दु:खी होने से शरीर भी दु:खी होने लगता है।

मित्रों की मदद हमारी उतनी मदद नहीं करती जितना कि केवल यह विश्वास कि वे आवश्यकता होने पर हमारी सहायता करेंगे।

पाठकों से निवेदन

कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि-

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/-(एक वर्ष) होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/- जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

शिव एवं शिवरात्रि (पृष्ठ १५ का शेष)

(11)-शरीर पर भस्म : शिव अपने शरीर पर भस्म लपेटे हुए हैं। यह सिद्ध करते हैं कि यह शरीर भस्म होने वाला है। भस्मान्तं शरीरम्। (यजु० ४०/१५) आशय यह है कि योगी शिव शरीरादि मोह से विरक्त हैं यानि विलासिता से दूर हैं।

(12)-नादिया वृषभ : शिव की सवारी नादिया या वृषभ है। 'नादिया' नाद शब्द का अपभ्रंश है। नाद का अर्थ ध्वनि है, सर्वश्रेष्ठ ध्वनि ओंकार की है।

स्पष्ट है कि उक्त प्रतीकात्मक संकेतों के आधार पर शिव के सत्य स्वरुप से अवगत हुआ जा सकता है। जैसा कि पुराणों में शिव को व्यभिचारी, अशुभ वेषधारी, कामान्ध आदि रूप में दर्शाया गया है, वह सर्वथा मिथ्या है। शिवजी पूर्ण योगी थे, सच्चे साधक थे और समाधिस्थ, ईश्वरोपासक थे व कल्याणकारी मार्ग पर चलने वाले थे। उन्होंने समाज के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व जीवन समर्पित कर दिया था। महान व्यक्तित्व के धनी थे, उन्हें योगिराज महापुरुष कहा जाये और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वयं का जीवन सफल कर पायें तभी महर्षि दयानंद सरस्वती के बोधोत्सव पर शिव व शिवरात्रि सफल होगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

स्व. पं. चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

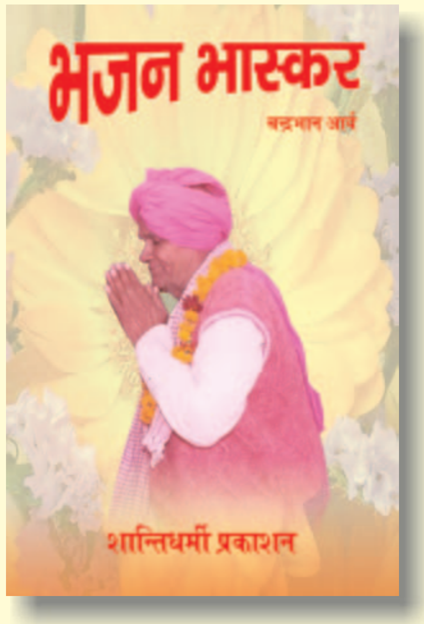

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन

756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)

दूरभाष : 9416253826, 9996338552

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

22 कैरेट हालमार्क आभूषणों के
विश्वसनीय निर्माता

नोट : राशि रत्न अंगूठी में फिट किए जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र सोनी

नाईयों वाली गली (माता वाली), मेन बाजार, जीन्द

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (फरवरी, २०२०) P.R. No. : PKL 150-A/2020-22

॥ ओ३म् ॥

Your child's bright future with Bharteey Culture ....

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

SHIVALIK गुरुकुल

A Modern C.B.S.E. Pattern Residential School Only for Boys

आचार्य नन्दकिशोर
(निदेशक)

"शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, सेवा"

मूलभूत सुविधाएँ

❖ शहर के शोरगुल से दूर 16 एकड़ के विशाल परिसर में स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त वातावरण ❖ आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल एवं हवादार कक्षा-कक्ष ❖ अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत प्रशिक्षण के लिए भाषा प्रयोगशाला ❖ सभी विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय ❖ CCTV कैमरे से युक्त छात्रावास एवं विद्यालय ❖ आधुनिक उपकरणों से युक्त शूटिंग रेंज ❖ घुड़सवारी ❖ नियमित अध्यापक-अभिभावक मीटिंग ❖ अत्याधुनिक Computer प्रयोगशाला ❖ SMS द्वारा सूचना प्रेषण ❖ सुसज्जित रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, गणित, सामाजिक और विज्ञान प्रयोगशालाएं ❖ समर्पित एवं अनुभवी स्टाफ ❖ संगीत कक्ष ❖ गुरुकुल App के माध्यम से छात्रों की दैनिक शैक्षिक एवं उपस्थिति जानकारी ❖ सभी सुविधाओं से युक्त वातानुकूलित छात्रावास ❖ विभिन्न खेल प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों की व्यवस्था ❖ प्रतिदिन सन्ध्या-यज्ञ के लिए यज्ञशाला ❖ विस्तृत व हरे-भरे खेल के मैदान।

FEE STRUCTURE

Class	Amount
4th to 6th	1,25,000/-
7th to 8th	1,30,000/-
9th to 10th	1,35,000/-
11th*	1,45,000/-

प्रवेश प्रारम्भ

कक्षा चौथी से ग्याहरवीं
Class IV to XI
(Medical, Non Medical, Commerce)
2020-21

VILL. ALIYASPUR, P.O. SARAWAN, MULLANA, AMBALA-133 206 (HARYANA)
shivalikgurukul.ambala@gmail.com • www.shivalikgurukul.com
Admission Helpline : 9671228002, 9671228003, 8813061212, 8295896525, 9053720871

Facebook@ShivalikGurukul Please Like, Share and Subscribe our School Youtube Channel Shivalik Gurukul for Videos and More Updates

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्। अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्।